श्री कल्याण मन्दिर विधान

दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।
श्री धरसेनाचार्य देव पुष्पदन्त एवं भूतबलि मुनिवरों
को षट्खण्डागम का उपदेश देते हुए।

श्री कुमुदचन्द्राचार्य विरचित स्तोत्र पर आधारित

श्री कल्याण मंदिर विधान

(पार्श्वनाथ स्तोत्र)

पद्यानुवादक

दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी

कृति	:	**श्री कल्याण मन्दिर विधान**
शुभाशीष	:	**पुष्पगिरि प्रणेता परम पूज्य** **गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंतसागर जी महाराज**
कृतिकार	:	**प.पू. दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज**
संस्करण	:	द्वादश जुलाई 2025 (2100 प्रतियाँ)
प्रकाशक	:	सौरभांचल प्रकाशन (क्र. 120)
प्राप्ति स्थल	:	1. **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र,** पुष्पगिरि, सोनकच्छ, जिला देवास (म.प्र.) फोन : 07270-22870
		2. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थ सौरभाँचल,** श्री श्रुत स्कन्ध मन्दिर जी.टी. करनाल रोड, गन्नौर (हरियाणा)
		3. **श्री दिगम्बर जैन मंशापूर्ण महावीर क्षेत्र** **जीवन आशा हॉस्पिटल** कावड़ मार्ग, गंगनहर, मुरादनगर (गाजियाबाद)
मूल्य	:	रु. 60/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो" एक ऐतिहासिक सत्य

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

जैन धर्म में देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन में कारण है। चौबीस तीर्थंकर एवं 1452 गणधर तथा द्वादशांगमय श्रुतज्ञान होने के उपरांत भी वर्तमान काल में तीर्थंकर महावीर स्वामी का शासन काल होने के कारण मंगल स्वरूप वे ही हैं इसलिए **"मंगलं भगवान् वीरो"** कहकर **"दीपावली पर्व"** को महत्व दिया जाता है तथा उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी की दीक्षा की स्मृति को **"मंगलं गौतमो गणी"** कहकर **"गुरु पूर्णिमा"** के रूप में महत्व दिया जाता है तथा 633 वर्ष बीतने के उपरांत श्रुत विच्छेद न हो जाये इसलिए मंत्र ज्ञाता धरसेनाचार्य ने अपना अंग श्रुतज्ञान आचार्य पुष्पदंत स्वामी को समर्पित किया और कहा भी है–

जयउ धरसेण णाहो जेण महाकम्म पयडि पाहुड सेलो।
बुद्धि सिरेणुद्धरियो समप्पियो पुप्फदंतस्स।।
(ध.पु.भा.-2)

अर्थात् वे धरसेन स्वामी जयवंत हों, जिन्होंने **महाकर्मप्रकृति** प्राभृत रूपी पर्वत को अपनी बुद्धिरूपी मस्तक पर धारण करके **आचार्य पुष्पदंत** को समर्पित किया।

उनसे शिक्षित शिष्य **आचार्य पुष्पदंत** ने **सर्वप्रथम णमोकार मंत्र** को निवद्ध मंगल कर षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखना प्रारंभ किया एवं गणधर वलय मंत्र के साथ स्वामी भूतबलि आचार्य ने ग्रन्थ पूर्ण किया। इस उपलक्ष्य में **"श्रुतपंचमी"** पर्व मनाया जाता है यही ऐतिहासिक सत्य है इसलिए शुद्ध ग्रन्थ के प्रथम लेखक के रूप में **ऋषि सभा के अधिपति आचार्य पुष्पदंत स्वामी** का स्मरण करते हुए **"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो"** कहा जाता है।

ये तीनों ही जैनधर्म के उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं। इसलिए धवलाकार वीरसेन स्वामी ने कहा–

"तदो मूलतंत कत्ता वद्ढ़माण भडारयो, अणुतंत कत्ता गौदम स्वामी उवतंत कत्तारा भूदबली पुप्फदंतादयो वीयराय दोष मोहा मुणिवरा"
(ध.पु.भा.-1, पृ:73)

अर्थात् मूलग्रंथ कर्ता वर्द्धमान भट्टारक अणुतंत कर्ता गौतम स्वामी, उपतंत ग्रंथ कर्ता भूतबलि पुष्पदंतादि, वीतराग दोष मोह रहित मुनिवर हैं।

इसे ही शुद्ध दिगम्बर आगम प्रमाणानुसार निम्न श्लोक के रूप में कहा जाता है–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

वृहत् शान्तिधारा पाठ

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्-रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्त्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय, अनन्तचतुष्टयसहिताय, समवसरण-केवलज्ञान-लक्ष्मीशोभिताय, अष्टादश-दोषरहिताय, षट्-चत्वारिंशद्-गुणसंयुक्ताय, परमेष्ठि-पवित्राय, सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय, अनंत-संसार- चक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं (अमुक राशिनामधेयानां) व्याधिं घ्नन्तु। श्री जिनाभिषेकपूजन प्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष, रोग, शोक, भय, पीड़ा, विनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष, दोष, कल्मषाय, दिव्य-तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न, प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्वारिष्ट, शान्ति, कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्न-शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु-कुरु स्वाहा ।

मम कामं शान्तिं-शान्तिं । रतिकामं शान्तिं-शान्तिं ।
बलिकामं शान्तिं-शान्तिं । क्रोधं-पापं-वैरं च शान्तिं-शान्तिं ।
अग्निवायुभ्यं शान्तिं-शान्तिं । सर्वशत्रु-विघ्नं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वोपसर्गं शान्तिं-शान्तिं । सर्वविघ्नं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वराज्य दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वचौर दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्व-सर्प-वृश्चिक-सिंहादिभयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वग्रहभयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वदोषं व्याधिं डामरं च शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वपरमंत्रं शान्तिं-शान्तिं । सर्वात्मघातं परघातं च शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वशूल कुक्षि अक्षि शिरो ज्वररोगं शान्तिं-शान्तिं । सर्वमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वगजाश्व गौ-महिष-अजमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वराष्ट्रमारिं शान्तिं-शान्तिं । सर्वक्रूर-वेताल डाकिनी-भयानि शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वापस्मारिं शान्तिं-शान्तिं । अस्माकं सर्व अशुभकर्म-जनित-दुःखानि शान्तिं-शान्तिं।
दुष्टजनकृतान्-मंत्र-तंत्र-दृष्टि-मुष्टि-छल-छिद्रदोषान् शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वदुष्ट-देव-दानव-वीर-नर-नाहर-सिंह-योगिनी-कृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं ।
सर्व-अष्टकुली-नागजनित-विषभयानि शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वस्थावर जंगम वृश्चिक सर्पादिकृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं।
सर्वसिंहाष्टा-पदादि कृतदोषान शान्तिं-शान्तिं ।

परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि कृतदोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्व कर्माष्टकं शान्तिं-शान्तिं। ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र-विक्रम-सत्त्व-तेजो-बल-शौर्य-वीर्य-शान्तीः पूरय पूरय। सर्वजीवानंदनं कुरु कुरु जनानंदनं कुरु कुरु भव्यानंदनं कुरु कुरु सर्व गोकुलानंदनं कुरु कुरु। सर्वराजानंदनं कुरु कुरु । सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटंब-पतन-द्रोणमुख-संवाहनानंदनं कुरु कुरु । सर्वानंदनं कुरु कुरु स्वाहा ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

श्रीशान्तिरस्तु । शिवमस्तु । जयोस्तु । नित्यमारोग्यमस्तु । सर्व जीव कल्याण मस्तु। दीर्घायु रस्तु। शुभ अस्तु। सुकीर्ति रस्तु। धन धान्य समृद्धि रस्तु। सर्व रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु। सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र वृद्धि रस्तु। अस्माकं तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । समृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु । सुखमस्तु । अभिवृद्धिरस्तु । दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु । सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यै- श्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज पूजित सुरराय॥
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद शीश झुकायें॥

ॐ ह्रीं श्रीं *वृषभादि वीरान्तरेभ्यः शान्तये शान्तिधारा स्वाहा।*
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं *इति* ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीर जिनेद्राय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः॥

अर्घ

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे अभिषेकमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वर्धमानपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो महाशांतिधाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥5॥
मैं वंदौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाय॥6॥
भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इंद्रपद, मिलै आपतैं आप।
अनुक्रम ते शिवपद लहैं, नेम सकल हनि आप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥18॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हो, नेक निहार निकार॥19॥
जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥
वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमगसाधक साधु नमि, रच्यो पाठसुखदाय॥22॥
मंगल मूर्ति परमपद, पंचधरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥23।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंतदेव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव॥24।
मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन वच काय॥25॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥26॥
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह भवसागर दृढ़ पोत॥27॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

मंगल कलश स्थापना

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदंताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।
ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

1. **सर्वप्रथम शुद्ध जल से स्वयं को एवं हाथों को शुद्ध करें–**
   ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा।
2. **तत्पश्चात् जल से भूमि शुद्धि करें–**
   ॐ ह्रीं भूः शुद्धयतु स्वाहा।
3. **सकलीकरण करें–**
   ॐ ह्राँ णमों अरिहंताणं मम शीर्ष रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रीं णमों सिद्धाणं मम मस्तक रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रूं णमों आयरियाणं मम हृदय रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रौं णमों उवज्झायाणं मम नाभि रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रः णमों लोए सव्वसाहूणं मम पादौ रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
4. **अक्षत् चावल लेकर जमीन पर (जहाँ पर कलश स्थापित करना हो वहाँ) स्वास्तिक बनावें।**
   ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे नमो नमः स्वास्ति-2 जीव-2 नन्द-2 वर्द्धस्य-2 विजयस्व-2 अनुशाधि-2, पुनीहि-2 पुण्याहं-2 मांगल्यं मांगल्यं पुष्पाञ्जलि। **(पुष्प क्षेपण करें)**
5. ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमो अर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मंगल कलशं स्थापितं करोमि स्वाहा। **(यह मंत्र पढ़कर कलश स्थापित करें।)** अपनी जाति, गौत्र, दादा, पिताजी, माताजी, स्वयं, पत्नी, बच्चों का नाम तथा सम्वत्, माह, पक्ष, तिथि, वार, बोलकर कलश स्थापित करें कलश में 5 हल्दी, 5 सुपाड़ी, पीली सरसों, सबा रुपया, धनिया आदि मांगलिक वस्तुएं डाले।
6. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित क्षेत्रपाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(नैवेद्य पुष्प आदि अर्घ चढ़ायें)**

7. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित सर्व वास्तु देवा आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(अर्घं समर्पण करें)**
8. ॐ ह्रीं आँ क्रौं वायु कुमार देवाय अत्र स्थाने वायु शुद्धि कुरू-कुरू ह्रूँ फट् स्वाहा। **(हाथों से हवा करें अर्घं समर्पयामि)**
9. ॐ ह्रीं आँ क्रौं मेघ कुमार देवाय अत्र स्थाने भूमिं शुद्धि कुरू-कुरू अँ हँ सँ वँ क्षँ ठँ क्षः फट् स्वाहा **(अर्घं समर्पयामि)**
10. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अग्नि कुमार देवाय भूमि ज्वलय-2 फट् स्वाहा। **(कपूर जलावें) (अर्घं समर्पयामि)**
11. ॐ ह्रीं आँ क्रौं षष्टिसहस्त्र संख्येभ्यो नागकुमार देवाय जलाञजलि स्वाहा। **(जलं अर्घं समर्पयामि)**
12. ॐ ह्रीं आँ क्रौं इन्द्र, आग्ने, यम, नैऋत्य, वरूण, पवन, कुबेर, ईशान, सोम, घरणेन्द्र दिग्पाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
13. ॐ ह्रीं आँ क्रौं पंचदश तिथि देवता आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
14. ॐ ह्रीं आँ क्रौं आदित्य चन्द्र-मंगल बुध-गुरू शुक्र-शनि राहु-केतु नवग्रह देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
15. ॐ ह्रीं नमोऽर्हदभ्यो पंच परमेष्ठिभ्योः नमः। **(अर्घं)**
16. ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त चतुर्वीस तीर्थंकरेभ्योः नमः। **(अर्घं)**
17. ॐ ह्रीं वृषभसेनादि गौतमान्त गणधरेभ्योः नमः। **(अर्घं)**
18. ॐ ह्रीं मम कुल गुरूवे नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
19. ॐ ह्रीं आँ क्रौं गौमुखादि चतुर्विंशति यक्षादि देवाय अर्घं समर्पयामि।
20. ॐ ह्रीं आँ क्रौं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावति आदि चतुर्विंशति यक्षी देवाय नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
21. ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं धृति कीर्ति बुद्धि शान्ति पुष्टि लक्ष्मी देवीभ्यो नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
22. मम कुल गृह देवो जिनेश्वरो तीर्थंकरो गधधर गुरूओं, मम गुरू भक्ति प्रसादात् प्रसन्नो भवतु मम कुल (जाति) गोत्र का नाम स्मरण करें। मम् धन धान्य पुत्र पौत्रादिक सौख्यं शांतिं पुष्टिं आरोग्यं अक्षीणं भवत् स्वाहा।
23. कलश के सामने दीप धूप कर इष्ट देव की स्तुति करें। अर्घ चढ़ाकर पुनः क्षमा याचना कर विसर्जन करें।।

अर्घ-मंशापूर्ण महावीर स्वामी

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया
अक्षत कुसुम चरूवर पावन दीप धूप वन्दन भाया
सिद्ध शिला फल चाह लिये मैं अष्ट द्रव्य चढ़ाऊँगा
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

आचार्य श्री सौरभ सागर जी का अर्घ्य

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।

अपराजित मंत्राऽयं, सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण-पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिन-अष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष-मयाऽभ्यधायि।।1।।
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक विततैक चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल सकलायत विस्तृताय॥3॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरुपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥4॥
अर्हन्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति विधान

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

।।इति श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-स्वस्ति-मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥1॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥3॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥4॥

जंघा-नल-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु, प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपूर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणंचरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥8॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी र्विषाविषा दृष्टि-विषा विषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः॥9॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधु-स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्शयो नः॥10॥

॥इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

''देव-शास्त्र-गुरु-जिनतीर्थ-अकृत्रिम तीर्थ तीस चौबीसी विद्यमान 20 तीर्थंकर-निर्वाण भूमि'' की समुच्चय पूजन *

(आचार्य श्री सौरभ सागर जी महाराज द्वारा रचित)

परम् देव अरिहंत सिद्ध गुरु, आचारज साधु उवज्झाय।
माँ जिनवाणी बीस जिनेश्वर, विद्यमान तीर्थंकर ध्याय।।
तीर्थंकर मुनि मोक्ष भूमि अरुँ, अकृत्रिम जिन वंदन है।
तीस चौबीसी तीर्थंकर का, आह्वाहन स्थापन है।।

ॐ ह्रीं अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिन बिम्ब समूह-तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह-अत्र अवतर अवतर-अत्र तिष्ठ-तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

जल

जल जीवन रक्षित करता है, शांत स्वभावी सरल तरल।
चरणों में जल अर्पित करता, पाने को शुभ मोक्ष महल।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय **जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

---

*कभी-कभी समय की अल्पता के कारण आराधना के तीव्र भाव उत्पन्न होते हैं उन सभी आराधना चाहने वालों के लिए आचार्यश्री ने महाउपकार करके एक साथ "पंच परमेष्ठी, माँ जिनवाणी, विद्यमान बीस तीर्थंकर, अढाई द्वीप, सम्पूर्ण निर्माण भूमि, अकृत्रिम जिनबिम्ब (प्रतिमा) एवं तीस चौबीसी" की समुच्चय पूजा की रचना की है।

चंदन

ताप विनाशक तन का चंदन, पूज्य चरण में लें आया।
क्रोध द्वेष प्रतिशोध त्यागकर, शीतल सुरभित गुण गाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह संसार ताप विनाशनाय **चंदनं** निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

सिद्ध शिला का वासी आतम, पापी बन भव घूम रहा।
त्रय योगों को स्थिर करके, द्रव्य चढ़ा मन झूम रहा।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अक्षय पद प्राप्ताय **अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम भोग का रोग भयंकर, मन बगियाँ में खिलता हैं।
वैरागी प्रभु के सम्मुख आ, काम भाव सब मिटता हैं।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह कामबाण विनाशनाय **पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

पतितोद्धारक आप निराकुल, क्षुधारोग से पीड़ित हूँ।
धर्म ध्यान की औषध पाकर, भक्ति भाव से जीवित हूँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह क्षुधा रोग विनाशनाय **नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्या भाव का महा तिमिर प्रभु, काल अनादि से भीतर।
तव दर्शन की शुभ्र दीप से, ज्योतिर्मय आतम अंदर।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोहांधकार विनाशनाय **दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

तव चरणों की धूपायन में, कर्म धूप खेनें आया।
धर्म गंध चारों दिश फैले, मन पूजा कर हर्षाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अष्ट कर्म विनाशनाय **धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

फल

भक्ति भाव की दिव्य तरु में, चढ़कर रत्नत्रय पाऊँ।
जिन गुण फल आतम में प्रगटे, सिद्धालय में रम जाऊँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोक्षफल प्राप्ताय **फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

पंचपरम गुरु परमेष्ठी हैं, पूज्य पुरुष अरिहंत मुनि।
सिद्ध निरामय निराकार हैं, अष्ट कर्म के कष्ट हनि।।1।।

आचारज उवज्झाय साधुगण, ज्ञानध्यान तप लीनयति।
णमोकार नित जपकर करता, चरण वंदना जैनमति।।2।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व प्रभो
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांश पद, वासु विमलानन्त नमो।।3।।

धर्म शान्ति कुन्थु अरनाथा, मल्लि मुनिसुव्रत नमि जपूं।
नेमी पारस महावीर जी, वर्तमान चौबीसी भंजू।।4।।

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी, अष्टापद पावा गिरनार।
चम्पापुर सह ढाई द्वीप की, मोक्ष भूमि बन्दूँ शतवार।।5।।

सीमंधर से अजितवीर्य तक, विद्यमान श्री बीस जिनेश।
क्षेत्र विदेह में देह रहित हो, हरते सारे कर्म क्लेश।।6।।

आठ कोटि अरुँ छप्पन लक्षा, सत्तावन हज्जार कहें।
चार शतक इक्यासी प्रतिमा, नमन उन्हें शतवार करें।।7।।

जिनप्रतिमा अकृत्रिम जग में, दिव्य रूप है वृहद विशाल।
ऊर्ध्व अधो अरुँ मध्य लोक के, जिन प्रतिमा बन्दूँ त्रयकाल।।8।।

ऐरावत और भरत क्षेत्र के, तीर्थंकर गुणगान करूँ।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीस चौबीसी ध्यान धरूँ।।9।।

प्रभु पूजन दर्शन वंदन से, निद्धत निकाचित कर्म कटें।
अनुपम आत्मिक अव्यय सुख का, सूरज निज आतम प्रगटे।।10।।

दिव्य ध्वनि की निर्मल वाणी, माँ जिनवाणी कहलाती।
दिव्य ज्ञान दे अन्तर्मन की, कल्मषता सब धो जाती।।11।।

परमेष्ठी जिनवाणी माता, क्षेत्र विदेह के बीस जिनेश।
सिद्ध भूमि अकृत्रिम प्रतिमा, तीस चौबीसी के तीर्थेश।।12।।

देव शास्त्र गुरु तीरथ भूमि, तीर्थंकर को सदा नमूँ।
अर्घावली चरणों में देकर, शुद्धातम को सदा भजूँ।।13।।

दोहा- **कर्म रहित जिनदेव की, भक्ति करे कल्याण।**
"सौरभसागर" नित नमें, पाने शाश्वत धाम।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जयमालाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **परमेष्ठी श्रुत बीस जिन, तीस चौबीसी ध्याय।**
अकृत्रिम जिनराज भज, सिद्ध भूमि सिर नाय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री कल्याण मन्दिर विधान

माण्डला

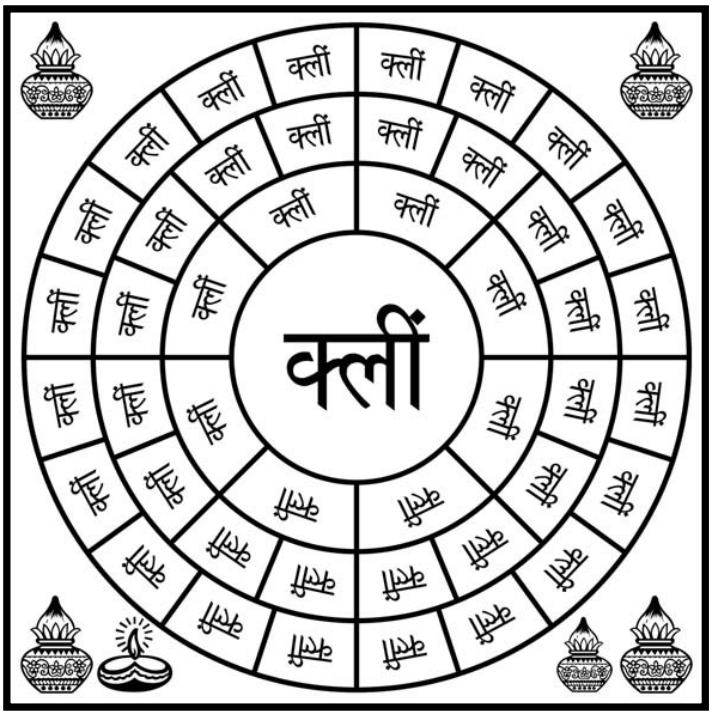

कुल अर्घ्य 45 : प्रथम वलय-8, द्वितीय वलय-16, तृतीय वलय-20

कल्याण मंदिर व्रत विधि

व्रतारम्भ : पार्श्वनाथ भगवान के किसी भी कल्याणक तिथि, दिवस या रविवार या 44 चतुर्दशी

अवधि : 1 वर्ष से 4 वर्ष

व्रत पूजा : व्रत वाले दिन कल्याण मंदिर विधान, पूजा पाठ करें।

जाप : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वसौख्यं कुरु कुरु नमः।

व्रत विधि : 44 उपवास या एकासन या चार या छः रस त्याग।

श्री कल्याण मन्दिर विधान प्रारम्भ

दोहा

मोह महारिपु जीतकर, कर्म किये चकचूर।
कल्याण धाम श्री पार्श्व जिन, भक्ति करूँ भरपूर॥
कुमुद चन्द्र आचार्य ने, स्तोत्र रचा महान्।
श्रद्धा से पूजा करें, मुक्ति निकट यह जान॥

स्वस्तिकस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्थापना

फैल रही है प्रभा सूर्य सी, वर्ण तुम्हारा श्याम है।
सिद्ध लोक में आप विराजे, रहा न जग से काम है॥
प्राणत स्वर्ग से आए मुनिवर, फणि लाञ्छन को पाए हैं।
गुण पाने श्री वामा नन्दन, पूजा पाठ रचाए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर सम्पन्न! श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र मम हृदये अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर सम्पन्न! श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र मम हृदये तिष्ठ-तिष्ठ! ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर सम्पन्न! श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र मम हृदये सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

गंगा सिन्धु शुभ सरवर अरूँ, जिन तीर्थों का जल लाऊँ।
शरद चन्द्र सा चारू पात्र ले, चरणाम्बुज में नीर चढ़ाऊँ॥
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ॥

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

दिग्दिगन्त तक गन्ध है फैली, तरु से फणिधर लिपट रहे।
भक्ति ध्यान से समता पाकर, कर्म पांशु से निपट रहे॥
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ॥

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

नयन मनोहर सुन्दर तन्दुल, अक्षत अक्षय लाया हूँ।
मन वच तन को अक्षत करके, वन्दन कर हर्षाया हूँ॥
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ॥

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

गुंजन करते भ्रमर पुष्प पर, गन्ध सुगन्ध से भरे पड़ें।
अद्भुत मनहर दिव्य पुष्प ले, चरणों में यह द्रव्य चढ़े॥
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ॥

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

स्वर्ण पात्र में अन्न पान ले, क्षुधा शमन को बहु खाए।
त्याग किए बिन षट्रस मनवा, निजरस ना ही चख पाए॥
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ॥

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अन्तर मन में तमस मोह का, ज्ञान दीप से छट जाए।
मृणमय दीपक से भक्ति कर, मोह तिमिर भी घट जाए।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

चन्दन अरूँ कर्पूर चूर्ण ले, धूप अगन में खेता हूँ।
निज वैभव का सौरभ पाने, कर्म दहन कर देता हूँ।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौकिक फल का मधुर स्वाद है, इन्द्रिय से जाना जाता।
मोक्ष महाफल का आस्वादन, वीतरागी ही कर पाता।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अष्ट अंग नमाऊँगा।
अष्ट कर्म को शीघ्र नष्ट कर, अष्टम वसुधा पाऊँगा।।
सुर नर खग पशु नृप से पूजित, पार्श्वनाथ के चरण जजूँ।
कर्म कमठ उपसर्ग जीतकर, चिदानन्द कैवल्य भजूँ।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ्य

दिव्य आत्मा गर्भ में आई, सपने देखे वामा ने।
रतन बरसते खुशियाँ छाई, अश्वसेन के आँगन में।।
दूज कृष्ण वैशाख दिवस था, शुभ लक्षण प्रगटित होते।
नगर बनारस की गलियों में, नर देवा हर्षित होते।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयां गर्भ मंगलमण्डिताय कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी पावन, धरती पर अवतार लिया।
श्याम वर्ण का सुन्दर तन पा, क्षणभर शान्ति अपार दिया।।
काशी नगरी धन्य हुई प्रभु, ऐरावत ले इन्द्र आया।
मेरु पर्वत न्हवन कराकर, सहस्र नयन दर्शन पाया।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म मंगल मण्डिताय कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी का दिन, जन्म दिवस दीक्षाधारा।
लोकान्तिक अनुमोदन करके, शुभ भावों को शृंगारा।।
राजाओं सा वैभव पाकर, मन वैरागी बना रहा।
तीस बरस में दीक्षा लेकर, वन पर्वत में ध्यान करा।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां तप मंगल मण्डिताय कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गहन साधना महामना की, वन पर्वत में अमल रही।
अहिक्षेत्र की धरा धाम में, स्थिर होकर अचल रही।।
चैत्र कृष्ण की आई चतुर्थी, चार घातियाँ नाश किया।
केवलज्ञानी पार्श्वनाथ का, सबने जय जयकार किया।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण चतुर्थी दिने केवलज्ञान प्राप्ताय कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण की शुक्ला सातम को, सम्मेदाचल ध्यान करें।
चार अघाति कर्म नाशकर, सिद्धालय प्रस्थान करें।।

स्वर्ण भद्र का कूट मनोहर, दर्शन वन्दन हितकारी।
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, अर्घ समर्पित सुखकारी॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष मंगल मण्डिताय कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

शतवर्षों की आयु पाई, श्यामवर्ण सुन्दर सुखदाई।
तन नव हाथ अतुल बलधारी, नमो-नमो पारस फणधारी॥
शत्रु मित्र में समता रखते, मोह क्षोभ को हरपल तजते।
ध्यान धुरन्धर आत्म विहारी, नमो-नमो पारस फणधारी॥

(शान्तये शान्तिधारा परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व सौख्यं कुरु-कुरु नमः (नौ बार पढ़े)

जयमाला

विषय विकार विवर्जित तन मन, लोभ शत्रु का दमन किया।
चिदानन्द चैतन्य विहारी, श्रद्धा धर वन्दन किया॥
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करों।
दोष तिरेशठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो॥1॥
नाम जाप से कार्य सिद्ध हो, श्रेष्ठ चतुष्टय धारी हो।
आत्म रमण कर ईश बनें प्रभु, मदन जीत अविकारी हो॥
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेशठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो॥2॥
दिव्य नाद कर हर्षित शत नृप, चरण कमल पूजा करते।
मुनियों के हे महा मुनि कह, ढोल मजीरा सब बजते॥
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेशठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो॥3॥
रत्न त्रय से भरी आत्मा, समवशरण से युक्त हुए।
क्षुधा तृषा की तपन मेटकर, द्विधा संग से मुक्त हुए॥

भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेशठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।4।।
अम्बर बनी दिशाएँ तेरी, मुक्ति रमा के वर प्यारे।
मोह क्षोभ से मुक्त जिनेश्वर, निराकार तन को धारे।।
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेसठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।5।।
जन्म जरा का नाम नहीं, चिन्मूरत आनन्द पाया है।
क्रोध मान तज आत्मरमण कर, दर्श ज्ञान सुख पाया है।।
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेशठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।6।।
मति श्रुत अवधि ज्ञान तजा, सर्वज्ञपने को महकाया।
स्वयं स्वयं का दिव्य रूप पा, तीन लोक में यश पाया।।
भव तारक हे पार्श्व जिनेश्वर, मम भक्ति स्वीकार करो।
दोष तिरेसठ रहित केवली, निज सम कर उद्धार करो।।7।।

धत्ता

यतियों में है श्रेष्ठ जिनन्दा, भव तारक है श्री अरिहन्ता।
विमल गुणों के समृद्ध चन्दा, नम्रीभूत है देव नरेन्दा।।
जिनपति मस्तक अहि ने धारा, पाप ताप सन्ताप है हारा।
'सौरभ सागर' नमता द्वारा, सिद्ध शिला सुख मिले अपारा।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

दया क्षमा से युक्त हैं, पार्श्वनाथ भगवान।
लौकान्तिक पूजा करे, चरण कमल धर ध्यान।।
प्रतिदिन जो पूजा करे, समता उर में धार।
पार्श्व परस पा स्वर्ण बन, होवे भव से पार।।

(इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

दोहा

काशी में वाराणसी, सुन्दर नगर है जान।
बाल उम्र संसार तजा, हुआ भेद विज्ञान॥
भक्ति से यश गा रहे, श्रद्धा शीश झुकाय।
पूर्ण अर्घ दे चरण में 'सौरभ' शिव सुख पाय॥

ॐ ह्रीं सर्व गुण सम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अष्टदल कमल पूजा

कल्याणमन्दिर-मुदार-मवद्य-भेदि,
भीता-भय-प्रदम-निन्दित-मङ्घ्रिपद्म्।
संसार-सागर-निमज्ज-द-शेष-जन्तु,
पोतायमान मभिनम्य जिनेश्वरस्य॥1॥

कल्याण धाम हो हो उदार तुम, पाप नाश में कारण हो।
भयाक्रान्त जो प्राणी जग में, भय का करते निवारण हो॥
पारावार में डूब रहे जो, जीव मात्र को पोत समान।
श्री जिन पारस नाथ चरण में, बारम्बार विनम्र प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं भवसमुद्रपतज्जन्तुतारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्य स्वयं सुरगुरु-र्गरिमाम्बुराशेः।
स्तोत्रं सुविस्तृत-मति-र्न विभुर्विधातुम्॥
तीर्थेश्वरस्य कमठ-स्मय धूमकेतोस्।
तस्याह-मेष-किल संस्तवनं करिष्ये॥2॥

सागर सा गुण गौरव तेरा, शब्दों में क्या व्यक्त करें।
बृहस्पति भी हार गया जो, सदा काल तव भक्त रहे॥
कमठासुर के मान भस्म में, अग्नि शिखा सम हो प्रभु आप।
तीर्थ पति की स्तुति करता, विस्मय-पूर्वक हरने पाप॥2॥

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामान्यतोऽपिऽतव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिक शिशु-र्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः।।3।।

हे प्रभु तेरा रूप अनोखा, कैसे करूँ स्वरूप बखान।
मन्द बुद्धि मैं ना कर सकता, तेरी महिमा का गुणगान।।
प्रखर सूर्य की दिव्य प्रभा में, स्वयं रूप न लख पाता।
ऐसा कौशिक शिशु दिनकर का, वर्णन कैसे कर पाता।।3।।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह-क्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्,
मीयेत केन जलधे-र्ननु रत्नराशिः।।4।।

मोह कर्म के नश जाने पर, नर अनुभव सब कर सकता।
शक्ति भले कितनी हो उसकी, गुण वर्णन ना कर सकता।।
प्रलय काल में सागर का जब, पानी बाहर हो जाता।
रत्नों का फिर ढेर दिखें पर, कोई ना है गिन पाता।।4।।

ॐ ह्रीं गहनगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज-बाहु-युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः।।5।।

हे प्रभु! मैं हूँ मतिहीन पर, तुम गुण रत्नों के आगार।
फिर भी तेरी स्तुति करने, खड़ा हुआ बुद्धि अनुसार।।

अपनी छोटी भुजा से बालक, सहज भाव दर्शाता है।
देखो कितना बड़ा है सागर, और हाथ फैलाता है।।5।।

ॐ ह्रीं परमोन्नतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये योगिना-मपि न यान्ति गुणास्तवेश!,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममाव-काशः।
जाता तदेव-मस-मीक्षित-कारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।

बड़े-बड़े योगीजन प्रभुवर, गुण गाने असमर्थ रहे।
हम मूरख हैं ज्ञान हीन प्रभु, तव गुण गौरव कैसे कहें।।
ज्यों पँछी अपनी बोली में, प्रभुवर बातें करते हैं।।
त्यों हम बिना विचारे, प्रभुवर भक्ति तेरी करते है।।6।।

ॐ ह्रीं अगम्य गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्ता-मचिन्त्य-महिमा जिन! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रा तपो-पहत-पान्थ-जनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्म-सरसः स-रसोऽनिलोऽपि।।7।।

हे जिनेन्द्र! तव स्तुति की, महिमा अचिन्त्य कहलाती है।
नाम मात्र ही जीव मात्र को, भव पीड़ा से बचाती है।।
ग्रीष्म काल की तीव्र ताप से, ज्यों नर पीड़ित हो जाते।
पदम सरस की बात कहूँ क्या, सरस पवन सुख पहुँचाते।।7।।

ॐ ह्रीं स्तवनाहार्य क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिली भवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः।

सद्यो भुजङ्गम-मया इव मध्य-भाग-
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य॥8॥

मन मन्दिर के उच्चासन पर, वास करें पारस भगवन।
कर्मों के दृढ़तर बंधन भी, ढीले पड़ जाते तत्क्षण॥
विषधर जब चन्दन तरुवर पर, लिपट गया हो अति विकराल।
नीलकण्ठ के शब्द मात्र से, बन्धन ढीले हो तत्काल॥8॥

ॐ ह्रीं कर्मबन्धविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

अष्ट कमल दल की पूजा मैं, अष्ट द्रव्य से करता हूँ।
सुर नर देवो से परिपूजित, पार्श्व प्रभु को भजता हूँ॥
शिव सुख पद के भोक्ता जिनवर, वन्दन मम स्वीकार करो।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाऊँ, प्राण नाथ भवपार करो॥

ॐ ह्रीं अष्ट दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षोडशदल कमल पूजा

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाऽशु पशवः प्रपलायमानैः॥9॥

विपदायें लाखों आकर के, कई मुश्किलें खड़ी करें।
तव दर्शन की फूँक मात्र से, तिनके-सी तत्काल उड़ें।
जैसे गौस्वामी को लखकर, तजते पशुओं को तस्कर,
भय के मारे भग जाते वे, समझे उदित मान दिनकर॥9॥

ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्गविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जल मेष नून-
मनतर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः॥10॥

प्रभुवर जो तुमको हिय धारे, हो जाए भव सागर पार।
इसका मतलब ये ना समझो, भविजन देते तुमको तार॥
चर्म-मसक तिरने का कारण, वायु का है तीव्र संयोग।
मसक तीरे वायु के संगत, भव्य तरे पा तव संयोग॥10॥

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन॥11॥

हरि-हरादिक महापुरुषों को, किया पराजित काम ने।
उसी काम को क्षण भर में ही, नष्ट किया था आपने॥
रखता है सामर्थ्य वारि ज्यों, नाश करन को दावानल।
उसी वारि को जला डालता, क्रोधित होकर बड़वानल॥11।

ॐ ह्रीं अनंगमथनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्ननल्प-गरिमाणमपि प्रपन्नास्-
त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः॥12॥

जिनकी तुलना अन्य किसी से, कभी नहीं की जा सकती।
ऐसे प्रभु के गुण अनन्त को, जिह्वा कैसे गा सकती॥

हे प्रभु! तुमको जो हिय धारे, अतिशीघ्र तिर जाते है।
यह महिमा है विस्मय कारी, चिन्तन में ना आते है॥12॥

ॐ ह्रीं अतिशयगुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्मचौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी॥13॥

क्रोध शत्रु को सबसे पहले, हे प्रभु तुमने नष्ट किया।
एकागारिक कर्म को कहिये, किस विधि तुमने ध्वस्त किया॥
अभ्रशिला संस्सृति में देखो, एकदम शीतल कहलाता।
फिर भी हरे भरे वृक्षों को, क्या तुषार न झुलसाता॥13॥

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप,
मन्वेष-यन्ति हृदयाम्बुज कोष-देशे।
पूतस्य निर्मल-रुचे-र्यदि वा किमन्य,
दक्षस्य संभव-पदं ननु कर्णिकायाः॥14॥

बड़े-बड़े योगीजन प्रभुवर, ध्यान सदैव लगाते है।
हृदय कमल के मध्य भाग में, अन्वेषण कर ध्याते है॥
है पवित्र निर्मल सुकान्तिमय, कमल बीज का जन्म स्थान।
कमल कर्णिका हृदय कमल बिन, प्रभु मिले न सकल जहान॥14॥

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यानाज्जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति।

तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदाः॥15॥

किस धातु से सोना बनता, पा अग्नि का तीव्र संयोग।
शुद्ध स्वर्ण हो जाता पल में, तज कर कालिमा का योग॥
ऐसे ही संसारी प्राणी, तेरा ध्यान लगाते हैं।
राग द्वेष तन तजकर क्षण में, परमातम पद पाते हैं॥15॥

ॐ ह्रीं कर्मकिट्टदहनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः॥16॥

तुमको बैठा अपने तन में, भविजन ध्यान लगाते हैं।
और उसी तन को क्यों प्रभुवर, आप नष्ट करवाते हैं॥
ऐसा ही स्वभाव जीव का, राग द्वेष से रहित हुआ।
महापुरुषों ने विग्रह करके, काय द्वेष को शमित किया॥16॥

ॐ ह्रीं देहदेहिकलहनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद-बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप्यमृतमित्यनु-चिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष-विकारमपा-करोति॥17॥

हो अभिन्न तुम मुझसे प्रभुवर, ऐसे बुद्धि से ध्याते।
तज विकार तेरे प्रभाव से, तेरे सम ही बन जाते॥
यह अमृत है यूँ श्रद्धा कर, पानी पीता जो इन्सान।
क्या वह पानी विष विकार को, दूर नहीं करता विद्वान॥17॥

ॐ ह्रीं संसारविषसुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वामेव वीत-तमसं पर वादिनोऽपि,
नूनं विभो हरि-हरादि धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश सितो पि शंङ्खो,
नोगृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण॥18॥

अज्ञान तिमिर से घिरे हुए जो, तुम्हें मानते ब्रह्म महेश।
और तुम्हारी पूजा करते, अन्य मतावलम्बी जिनेश॥
मानों निश्चित प्यारे बन्धु, रोग पीलिया हुआ जिसे।
कई रंगों में श्वेत शंख भी, दिखता है विपरीत उसे॥18॥

ॐ ह्रीं सर्वजनवन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मोपदेश-समये सविधानु-भावा,
दास्तां जनो भवित ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीव-लोकः॥19॥

धर्म देशना के अवसर पर, जो आ जाता आप समीप।
मानव की तो बात अन्य है, पादप होता शोक रहित॥
दिनपति के प्रगटित होते ही, जीव मात्र जग जाते हैं।
तरूवर भी प्रमुदित हो करके, शीघ्र बोध को पाते हैं॥19॥

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्रं विभो! कथमवाङ्मुख-वृन्तमेव,
विष्वक्पतत्य विरला सुर-पुष्प-वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि॥20॥

देवों द्वारा सघन पुष्प की, वर्षा होती चारों ओर।
डंठल नीचे पँखुरी ऊपर, हो जाती है सबही ओर॥

आप निकटता सूचित करती, भव्य जीव को अहो प्रभो।
विज्ञ जनों के विधि के बन्धन, नीचे होते स्वयं विभो।।20।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिशोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थाने गभीर-हृदयोदधि-सम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वाः यतः परम-सम्मद-संङ्ग-भाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाप्य-जरा-मरत्वम्।।21।।

गम्भीर हृदय के सागर में प्रभु, दिव्य वचन तव मुखरित हैं।
मानव माने अमृत सम यह, जग जाहिर और प्रगटित है।।
भव्य प्राणी पी करके इसको, आनन्दित हो जाते हैं।
परम सौख्य को पाकर सहसा, अजर अमर हो जाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिविराजिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्सुदूर-मवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुङ्गवाय,
ते नून-मूर्ध्व-गतयः खलु शुद्ध-भावाः।।22।।

देवों द्वारा ऊपर नीचे, चँवर ढुराये जाते हैं।
नम्रीभूत वे शुद्ध चँवर ही, विनय पाठ सिखलाते हैं।।
प्रभु चरणों में मन वच तन से, जो झुक कर करते वन्दन।
कर्म रहित हो देह नाश कर, पा जाते हैं मुक्ति सदन।।22।।

ॐ ह्रीं सुरचामरसहितविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्यामं गभीर-गिरमुज्ज्वल-हेम-रत्न,
सिंहासनस्थमिह भव्य-शिखण्डिनस्त्वाम्।

आलोकयन्ति-रभसेन नदन्तमुच्चैश्,
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्॥23॥

उज्ज्वल कंचनमय सिंहासन, पर स्थित है श्यामल तन।
गम्भीर स्वरों में प्यारे तेरे, खिर जाते हैं दिव्य वचन॥
स्वर्ण सुमेरु पर्वत पर जब, होता मेघों का गर्जन।
भव्य मोर हर्षित हो करके, करते उसका अवलोकन॥23॥

ॐ ह्रीं पीठत्रयनायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन,
लुप्त-च्छदच्छवि-रशोक-तरुर्बभूव।
सान्निध्य-तोऽपि यदि वा तव वीतराग!
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि॥24॥

दैदीप्यमान प्रभु भामण्डल से, लुप्त छवि सुरतरु पाता।
स्वयं अचेतन होकर भी वह, आप प्रभा को बतलाता॥
राग द्वेष से रहित आप हो, जो भी आप निकट आता।
भव्य अहो! वह वीतराग हो, मोक्ष निकेतन को पाता॥24॥

ॐ ह्रीं भामण्डलमण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

कर्म रिपु को नाश कर, पाया केवलज्ञान।
धर्मदान देकर प्रभु, पाया मोक्ष महान॥
अष्ट द्रव्यमय अर्घ लें, पूजूँ मन वच काय।
मुक्ति श्रीमम निकट हो, भाव यही हम भाय॥

ॐ ह्रीं हृदय स्थित षोडश दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विंशतिदल कमल पूजा

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन,
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते॥25॥

वायु पथ में देवों द्वारा, होता रहता दुन्दुभि नाद।
हे प्राणी हे प्राणी! करलो, आतम हित तजकर परमाद!
मोक्ष पुरी में जाना चाहो, पार्श्व प्रभु का ले लो नाम।
चिन्तामणि हे विघ्न विनाशी, करते भविजन का कल्याण॥25॥

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभिनादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्योतितेषु भवता भुवनेषुनाथ,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता-कलाप-कलितोरु-सितातपत्र
व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः॥26॥

सारे भू-मण्डल पर प्रभुवर, फैला तेरा दिव्य प्रकाश।
अपने अधिकारों से च्युत हो, तारागण सह आया पास॥
श्वेत छत्र तव शोभा देता, ताराओं से घिरा हुआ।
श्यामाकर त्रय तनु धारण कर, तव सेवा में लगा हुआ॥26॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वेनप्रपूरित-जगत्त्रय-पिण्डितेन,
कान्ति-प्रताप-यशसामिव सञ्चयेन।
माणिक्य-हेम-रजत-प्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि॥27॥

सोना चाँदी माणिक आदि से, निर्मित है त्रय कोट महान।
सर्व सम्पदा से परिपूरित, तीन लोक के पिण्ड समान॥

कान्ति कीर्ति व तेज पुँज का, वर्तुल बना अति सुन्दर।
पार्श्व प्रभु का समवशरण ही, भव्यों का लेता मनहर।।27।।

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य-स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना,
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वसङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव।।28।।

नमन समय में इन्द्रों के, मुकटों को तजते दिव्य सुमन।
सर्वश्रेष्ठ आधार मानकर, लिपटे जाते आप चरण।।
आप समागम को पा करके, ना जाते विद्वान कहीं।
पाद पदम में तेरे रहकर, करते हैं कल्याण यही।।28।।

ॐ ह्रीं भक्तजनानवनपतिराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वं नाथ! जन्म जलधे-र्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्य सुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो! यदसि कर्म-विपाक-शून्यः।।29।।

जन्म मरण दुःख अर्णव से, प्रभु आप विमुख कहलाते हो।
आप शरण में जो आ जाता, उसको पार लगाते हो।।
अग्नि से परिपक्व अधोमुख, घट सिन्धु तिरवाता है।
कर्म विपाक से शून्य आप ये, विस्मय सत दर्शाता है।।29।।

ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्नभयतारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षर-प्रकृतिरप्य लिपिस्त्वमीश!
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास-हेतुः।।30।।

तीन लोक के स्वामी होकर, भी कहलाते हो निर्धन।
है अक्षर स्वभाव आपका, कर न सके तेरा लेखन।।
हे स्वामी अज्ञानवान भी, कहलाते हो आप यहाँ।।
सकल लोक की सकल वस्तुओं, के ज्ञाता हो आप यहाँ।।30।।

ॐ ह्रीं विस्मयनीयमूर्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राग्भार-सम्भृत-नभांसि-रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो।
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा।।31।।

पूर्ण रूप से नभ मण्डल को, व्याप्त किया था धूल गिरा।
पूर्व बैर के कारण प्रभु पर, दुष्ट कमठ उपसर्ग किया।।
फिर भी पारस स्वामी तेरा, छाया तक न नष्ट किया।
किन्तु विफल हो हो हताश वह, कर्म पांशु से ग्रस्त हुआ।।31।।

ॐ ह्रीं कमठोत्थापितधूल्युपद्रवजिताय क्लीं महाबलीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यद्गर्जदूर्जित - घनौघमदभ्र - भीम-
भ्रश्यत्तडिन्-मुसल-मांसल-घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर-वारिदध्रे,
तेनैव तस्य जिन! दुस्तर-वारि कृत्यम्।।32।।

महा भयंकर दुस्तर वारि, वर्षा कर उपसर्ग किया।
बादल गरजा विद्युत चमका, अपना पौरुष व्यर्थ किया।।
फिर भी पार्श्व प्रभुवर तेरा, कुछ भी ना वह कर पाया।
अपने ही हाथों से वह तो, अपने ऊपर खड्ग चलाया।।32।।

ॐ ह्रीं कमठकृतजलधारोपसर्गनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड-
प्रालम्बभृद्-भयदवक्त्र-विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याभवत्प्रति भवं भव-दुःख-हेतु॥33॥

कमठासुर ने महाभयानक, धारी नर मुण्डन माला।
और गगन से निकल रही थी, नभ चुम्बी अग्नि ज्वाला॥
भंग तपस्या को करने वह, भूत प्रेत बहु दौड़ाया।
न बिगड़ा प्रभु पारस तेरा, स्वयं कर्म से जकड़ाया॥33॥

ॐ ह्रीं कमठकृतपैशाचिकोपद्रवजयशीलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रिसंध्य
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य-कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मल-देह-देशाः,
पाद-द्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः॥34॥

हे प्रभु तेरे चरण कमल में, विधिवत आते तीनों काल।
प्रमुदित होकर भक्ति करते, तजकर माया का जंजाल॥
धन्य धन्य वे प्राणी जग में, जो करते पूजा तेरी।
आराधन कर पाद पदम की, मेटे भव भव की फेरी॥34॥

ॐ ह्रीं धार्मिकजनवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्मिन्नपार-भव-वारि-निधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति॥35॥

हे मुनीन्द्र! मैं कई जन्मों से, दुःख उठाता आया हूँ।
फिर भी कानों से ना प्रभुवर, आप नाम सुन पाया हूँ॥

जो भी ध्यान लगाकर तेरा, मंत्रोच्चारण सुनता है।
विषधर विपदाओं का उसको, कभी नहीं डस सकता है॥35॥

ॐ ह्रीं पवित्रनामधेयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मान्तरेऽपि तव-पाद-युगं न देव!
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्॥
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां,
जातो निकेतन महं मथिताशयानाम्॥36॥

हे नाथ आपके चरण युगल में, कई जन्मों से ना आया।
मन वंछित फल देने वाले, ना तेरी पूजाकर पाया॥
इसलिए जगति प्राणी मम, हिय भेदी करते अपमान।
हे मुनीश! तेरे सम्मुख रह, पा जाऊँ फिर से सम्मान॥36॥

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नूनं न मोह-तिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते॥37॥

मोह तिमिर से आच्छादित थे, ना खोले मैंने लोचन।
एक बार भी निश्चयपूर्वक, नहीं किये तेरे दर्शन॥
इसलिए प्रभु मर्म-भेदी दुःख, मुझको अति ही सता रहे।
पूर्व जन्म में दर्श किया ना, उसका फल यह बता रहे॥37॥

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।

जातोऽस्मि तेन-बान्धव! दु:खपात्रं,
यस्मात्क्रिया: प्रतिफलन्ति न भाव-शून्या:॥38॥

हे प्रभु तेरे श्री चरणों की, दर्शन पूजन को आया।
नाम आपका सुना बहुत पर, मन से ना तुमको ध्याया॥
दु:खों का मैं पात्र बना हूँ, भाव शून्य करके भक्ति।
बिना भाव के क्रिया कदापि, फल नहीं देती है उक्ति॥38॥

ॐ ह्रीं भक्तिहीनजनमाध्यस्थाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वं नाथ! दु:खिजन-वत्सल! हे शरण्य!,
कारुण्य-पुण्य-वसते! वशिनां वरेण्य।
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय॥
दु:खाङ्कुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि॥39॥

हे नाथ दुखी जन वत्सल हो, तुम शरणागत के प्रतिपालक।
करूणा की हो पुण्य मूर्ति तुम, इन्द्रियजेता जग नायक॥
हे महेश! भक्ति पूर्वक मैं, आप चरण में झुकता हूँ।
मेरे दुख को दूर करो, मैं यही प्रार्थना करता हूँ॥39॥

ॐ ह्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नि:संख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य,
मासाद्य सादित-रिपु प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद-पङ्कजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो,
वन्ध्योऽस्मि चेदभुवन पावन! हा हतोऽस्मि॥40॥

हे अनन्त गुण धारक भगवन, जगति को करते पावन।
शरणागत के रक्षक हो तुम, कर्म शत्रु का किया हनन॥
तेरे पद पंकज में रहकर, ध्यान हीन फल रहित हुआ।
इसीलिए हे प्रभुवर मैं तो, कर्मों द्वारा दुखित हुआ॥40॥

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायकपदकमलयुगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्र-वन्द्य! विदिताखिल-वस्तुसार!
संसार-तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!
त्रायस्व देव! करुणा-ह्रद! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः।।41।।

अखिल विश्व के ज्ञाता दृष्टा, इन्द्रो द्वारा वन्दित हो।
भव तारक हो आप प्रभु और, तीन लोक के स्वामिन हो।।
करूणा सागर आप देव हो, आओ दुखी को निस्तारों।
महा भयंकर दुख अर्णव से, पावन करके पार उतारो।।41।।

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्तत-सञ्चितायाः।
तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य भूयाः,
स्वामी! त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।

हे शरणागत के प्रतिपालक, आप शरण मैं हूँ आया।
तेरे चरणों की भक्ति से, किञ्चित हमने पुण्य कमाया।।
उसका फल गर देना चाहो, तो इतना सा फल देना।
इस भव पर भव में केवल, प्रभु मम स्वामी तुम ही रहना।।42।।

ॐ ह्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!
सान्द्रोल्लसत्पुलक-कञ्चुकिताङ्गभागाः।
त्वद्बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः।।43।।

हे जिनेन्द्र जो भव्य पुरुष है, सावधान मति से आते।
निर्मल तेरे मुख अम्बुज को, अपना ही वे लक्ष्य बनाते।।

सघन रूप से उठे हुए, रोमांचों से तन व्याप्त किए।
विधि पूर्वक थुति रचते उनकी, कर्म काटकर आप्त हुए।।43।।

ॐ ह्री जन्ममृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन नयन 'कुमुदचन्द्र'! प्रभास्वराः,
स्वर्ग-सम्पदो भुक्तया।
ते विगलित - मल - निचया,
अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।

प्राणी मात्र के नयन कमल को, विकसाने वाले चन्द्रेश,
स्वर्ग सम्पदा को पाने वे, सहसा करते स्वर्ग प्रवेश।
किञ्चित काल वे भोग-भोग कर, नरगति को पा जाते हैं,
अष्ट कर्म को शीघ्र नाशकर, मोक्ष निकेतन पाते हैं।।44।।

ॐ ह्रीं कुमुचन्द्रयतिसेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

धत्ता

सब विघ्न हरे सब तोष करे, संसार तजे शिव सुख पावे।
जो संतुति करता श्री को पाता, रोग शोक सब नश जावे।।
यह अर्घ लिया है चरण दिया है, पार्श्वनाथ भवपार करो।
श्री कुमुद चन्द्र संग सौरभ सागर, का प्रभुवर उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं हृदय स्थित विंशति-दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

चरण कमल इन्द्रों से पूजित, शान्त कर्म जो किये थे अर्जित।
शम दम यम नीयम के धारी, कार्य सिद्ध हो हे अविकारी।।1।।
सुन्दर नेत्र ज्ञान के खोले, सुर नर तव भक्ति में डोले।
गुण रत्नों की खान जिनेश्वर, नमो नमो पारस परमेश्वर।।2।।

भव समुद्र के तारण हारे, देव अनन्त गुणों को धारे।
चिदानन्द चैतन्य विहारी, उत्तम गुण प्रगटित भवहारी॥3॥
राग द्वेष विवर्जित गुणधर, कर्म बन्ध निर्बन्ध जितेश्वर।
दुष्टोपद्रव नाशन वीरा, ध्यान ध्येय मनमथ चकचूरा॥4॥
कमठासुर बैरी है आया, धूलि जल पत्थर बरसाया।
भूत प्रेत का जाल बिछाया, धार्मिक मन न डिगने पाया॥5॥
क्रोध अनल गरिमा से जीता, सर्वज्ञ बने हे कर्म विजेता।
तपकर चारों कर्म हने हो, शल्य रहित आत्मेश बने हो॥6॥
जगति विषहर अमृत सरवर, पद नत देव नगेन्द्र प्रभुवर।
शोक रहित हो अचल जिनेश्वर, पुष्प वृष्टि नित होती फणिधर॥7॥
योजन दिव्य ध्वनि स्वर सुन्दर, ढ़ोरे चौंसठ चँमर मनोहर।
सिंहासन पर आप विराजे, भामण्डल भव सात बतायें॥8॥
दुन्दुभि नाद सदा जयवन्ता, श्वेत क्षत्र सब ताप हरन्ता।
हेमार्जुन मणि रतन है सोहें, समवशरण सबके मन मोहें॥9॥
भव्य जीव सब अन्दर आते, विस्मय से नत कर्म नशाते।
मोक्ष प्रदाता नाम तिहारा, श्रेष्ठ चरण जिनराज सहारा॥10॥
दर्शन करता पाप नशाता, भक्ति हीन भव गोता खाता।
वात्सल्य धर नम्रीभूत हो, भाग्य सराहे अभिभूत हो॥11॥
लोका-लोक पदार्थ निहारे, सुकृत जन आनन्द विहारे।
जन्म जरा मृत्यु से रहिता 'कुमुद चन्द' स्तोत्र रचयिता॥12॥

दोहा

तीन लोक के तिलक हो, पार्श्व नाथ भगवान।
धर्म ध्यान निधी पा रहे, कर तेरा गुण गान॥
भक्त सभी नत चरण में, भक्ति भाव उर धार।
'सौरभ' सुरभित हो रहा, गा-गा मंगलाचार॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं क्रुर कमठोपद्रव जिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पार्श्वनाथ भगवान के, गुण हैं अपरम्पार।
'सौरभ सागर' नत हुए, गा गा मंगलाचार॥

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री कल्याण मंदिर स्तोत्र (हिन्दी)

पद्यानुवादक : आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

कल्याण धाम हो हो उदार तुम, पाप नाश में कारण हो।
भयाक्रान्त जो प्राणी जग में, भय का करते निवारण हो॥
पारावार में डूब रहे जो, जीव मात्र को पोत समान।
श्री जिन पारस नाथ चरण में, बारम्बार विनम्र प्रणाम॥1॥

सागर-सा गुण गौरव तेरा, शब्दों में क्या व्यक्त करें।
बृहस्पति भी हार गया जो, सदा काल तव भक्त रहे॥
कमठासुर के मान भस्म में, अग्नि शिखा सम हो प्रभु आप।
तीर्थ पति की स्तुति करता, विस्मय-पूर्वक हरने पाप॥2॥

हे प्रभु तेरा रूप अनोखा, कैसे करूँ स्वरूप बखान।
मन्द बुद्धि मैं ना कर सकता, तेरी महिमा का गुणगान॥
प्रखर सूर्य की दिव्य प्रभा में, स्वयं रूप न लख पाता।
ऐसा कौशिक शिशु दिनकर का, वर्णन कैसे कर पाता॥3॥

मोह कर्म के नश जाने पर, नर अनुभव सब कर सकता।
शक्ति भले कितनी हो उसकी, गुण वर्णन ना कर सकता॥
प्रलय काल में सागर का जब, पानी बाहर हो जाता।
रत्नों का फिर ढेर दिखें पर, कोई ना है गिन पाता॥4॥

हे प्रभु! मैं हूँ मतिहीन पर, तुम गुण रत्नों के आगार।
फिर भी तेरी स्तुति करने, खड़ा हुआ बुद्धि अनुसार॥
अपनी छोटी भुजा से बालक, सहज भाव दर्शाता है।
देखो कितना बड़ा है सागर, और हाथ फैलाता है॥5॥

बड़े-बड़े योगीजन प्रभुवर, गुण गाने असमर्थ रहे।
हम मूरख हैं ज्ञानहीन प्रभु, तव गुण गौरव कैसे कहें॥
ज्यों पँछी अपनी बोली में, प्रभुवर बातें करते हैं।
त्यों हम बिना विचारे प्रभुवर, भक्ति तेरी करते है॥6॥

हे जिनेन्द्र! तव स्तुति की, महिमा अचिन्त्य कहलाती है।
नाम मात्र ही जीव मात्र को, भव पीड़ा से बचाती है॥
ग्रीष्म काल की तीव्र ताप से, ज्यों नर पीड़ित हो जाते।
पदम सरस की बात कहूँ क्या, सरस पवन सुख पहुँचाते॥7॥

मन मन्दिर के उच्चासन पर, वास करे पारस भगवन।
कर्मों के दृढ़तर बन्धन भी, ढीले पड़ जाते तत्क्षण॥
विषधर जब चन्दन तरुवर पर, लिपट गया हो अति विकराल।
नीलकण्ठ के शब्द मात्र से, बन्धन ढीले हो तत्काल॥8॥

विपदायें लाखों आकर के, कई मुश्किलें खड़ी करें।
तव दर्शन की फूँक मात्र से, तिनकेसी तत्काल उड़ें॥
जैसे गौस्वामी को लखकर, तजते पशुओं को तस्कर।
भय के मारे भग जाते वे, समझे उदित मान दिनकर॥9॥

प्रभुवर जो तुमको हिय धारे, हो जाए भव सागर पार।
इसका मतलब ये ना समझो, भविजन देते तुमको तार॥
चर्म-मसक तिरने का कारण, वायु का है तीव्र संयोग।
मसक तीरे वायु के संगत, भव्य तरे पा तव संयोग॥10॥

हरि-हरादिक महापुरुषों को, किया पराजित काम ने।
उसी काम को क्षण भर में ही, नष्ट किया था आपने॥
रखता है सामर्थ्य वारि ज्यों, नाश करन को दावानल।
उसी वारि को जला डालता, क्रोधित होकर बड़वानल॥11।

जिनकी तुलना अन्य किसी से, कभी नहीं की जा सकती।
ऐसे प्रभु के गुण अनन्त को, जिह्वा कैसे गा सकती॥
हे प्रभु! तुमको जो हिय धारे, अतिशीघ्र तिर जाते हैं।
यह महिमा है विस्मय-कारी, चिन्तन में ना आते हैं॥12॥

क्रोध शत्रु को सबसे पहले, हे प्रभु तुमने नष्ट किया।
एकागारिक कर्म को कहिये, किस विधि तुमने ध्वस्त किया॥
अभ्रशिला संस्सृति में देखो, एकदम शीतल कहलाता।
फिर भी हरे भरे वृक्षों को, क्या तुषार न झुलसाता॥13॥

बड़े-बड़े योगीजन प्रभुवर, ध्यान सदैव लगाते हैं।
हृदय कमल के मध्य भाग में, अन्वेषण कर ध्याते हैं॥
है पवित्र निर्मल सुकान्तिमय, कमल बीज का जन्म स्थान।
कमल कर्णिका हृदय कमल बिन, प्रभु मिले न सकल जहान॥14॥

किस धातु से सोना बनता, पा अग्नि का तीव्र संयोग।
शुद्ध स्वर्ण हो जाता पल में, तज कर कालिमा का योग॥
ऐसे ही संसारी प्राणी, तेरा ध्यान लगाते हैं।
राग द्वेष तन तजकर क्षण में, परमातम पद पाते हैं॥15॥

तुमको बैठा अपने तन में, भविजन ध्यान लगाते हैं।
और उसी तन को क्यों प्रभुवर, आप नष्ट करवाते हैं॥
ऐसा ही स्वभाव जीव का, राग द्वेष से रहित हुआ।
महापुरुषों ने विग्रह करके, काय द्वेष को शमित किया॥16॥

हो अभिन्न तुम मुझसे प्रभुवर, ऐसे बुद्धि से ध्याते।
तज विकार तेरे प्रभाव से, तेरे सम ही बन जाते॥
यह अमृत है यूँ श्रद्धा कर, पानी पीता जो इन्सान।
क्या वह पानी विष विकार को, दूर नहीं करता विद्वान॥17॥

अज्ञान तिमिर से घिरे हुए जो, तुम्हें मानते ब्रह्म महेश।
और तुम्हारी पूजा करते, अन्य मतावलम्बी जिनेश॥
मानों निश्चित प्यारे बन्धु, रोग पीलिया हुआ जिसे।
कई रंगों में श्वेत शंख भी, दिखता है विपरीत उसे॥18॥

धर्म देशना के अवसर पर, जो आ जाता आप समीप।
मानव की तो बात अन्य है, पादप होता शोक रहित॥
दिनपति के प्रगटित होते ही, जीव मात्र जग जाते हैं।
तरुवर भी प्रमुदित हो करके, शीघ्र बोध को पाते हैं॥19।

देवों द्वारा सघन पुष्प की, वर्षा होती चारों ओर।
डंठल नीचे पँखुरी ऊपर, हो जाती है सबही ओर॥
आप निकटता सूचित करती, भव्य जीव को अहो प्रभो।
विज्ञ जनों के विधि के बन्धन, नीचे होते स्वयं विभो॥20॥

गम्भीर हृदय के सागर में प्रभु, दिव्य वचन तव मुखरित हैं।
मानव माने अमृत सम यह, जग जाहिर और प्रगटित है॥
भव्य प्राणी पी करके इसको, आनन्दित हो जाते हैं।
परम सौख्य को पाकर सहसा, अजर अमर हो जाते हैं।21॥

देवों द्वारा ऊपर नीचे, चँवर ढुराये जाते हैं।
नम्री-भूत वे शुद्ध चँवर ही, विनय पाठ सिखलाते हैं॥
प्रभु चरणों में मन वच तन से, जो झुक कर करते वन्दन।
कर्म रहित हो देह नाश कर, पा जाते है मुक्ति सदन॥22॥

उज्ज्वल कंचनमय सिंहासन, पर स्थित है श्यामल तन।
गम्भीर स्वरों में प्यारे तेरे, खिर जाते हैं दिव्य वचन॥
स्वर्ण सुमेरु पर्वत पर जब, होता मेघों का गर्जन।
भव्य मोर हर्षित हो करके, करते उसका अवलोकन॥23॥

दैदीप्यमान प्रभु भामण्डल से, लुप्त छवि सुरतरु पाता।
स्वयं अचेतन होकर भी वह, आप प्रभा को बतलाता॥
राग द्वेष से रहित आप हो, जो भी आप निकट आता।
भव्य अहो! वह वीतराग हो, मोक्ष निकेतन को पाता॥24॥

वायु पथ में देवों द्वारा, होता रहता दुन्दुभि नाद।
हे प्राणी हे प्राणी! करलो, आतम हित तजकर परमाद!
मोक्ष पुरी में जाना चाहो, पार्श्व प्रभु का ले लो नाम।
चिन्तामणि हे विघ्न विनाशी, करते भविजन का कल्याण॥25॥

सारे भू-मण्डल पर प्रभुवर, फैला तेरा दिव्य प्रकाश।
अपने अधिकारों से च्युत हो, तारागण सह आया पास॥
श्वेत छत्र तव शोभा देता, ताराओं से घिरा हुआ।
श्यामाकर त्रय तनु धारण कर, तव सेवा में लगा हुआ॥26॥

सोना चाँदी माणिक आदि से, निर्मित है त्रय कोट महान।
सर्व सम्पदा से परिपूरित, तीन लोक के पिण्ड समान॥
कान्ति कीर्ति व तेज पुँज का, वर्तुल बना अति सुन्दर।
पार्श्व प्रभु का समवशरण ही, भव्यों का लेता मनहर॥27॥

नमन समय में इन्द्रों के, मुकटों को तजते दिव्य सुमन।
सर्वश्रेष्ठ आधार मानकर, लिपटें जाते आप चरण।।
आप समागम को पा करके, ना जाते विद्वान कहीं।
पाद पदम में तेरे रहकर, करते है कल्याण यही।।28।।

जन्म मरण दुख अर्णव से, प्रभु आप विमुख कहलाते हो।
आप शरण में जो आ जाता, उसको पार लगाते हो।।
अग्नि से परिपक्व अधोमुख, घट सिन्धु तिरवाता है।
कर्म विपाक से शून्य आप ये, विस्मय सत दर्शाता है।।29।।

तीन लोक के स्वामी होकर, भी कहलाते हो निर्धन।
है अक्षर स्वभाव आपका, कर न सके तेरा लेखन।।
हे स्वामी अज्ञान-वान भी, कहलाते हो आप यहाँ।
सकल लोक की सकल वस्तुओं, के ज्ञाता हो आप यहाँ।।30।।

पूर्ण रूप से नभ मण्डल को, व्याप्त किया था धूल गिरा।
पूर्व बैर के कारण प्रभु पर, दुष्ट कमठ उपसर्ग किया।।
फिर भी पारस स्वामी तेरा, छाया तक न नष्ट किया।।
किन्तु विफल हो, हो हताश वह, कर्म पांशु से ग्रस्त हुआ।।31।।

महा भयंकर दुस्तर वारि, वर्षा कर उपसर्ग किया।
बादल गरजा विद्युत चमका, अपना पौरुष व्यर्थ किया।।
फिर भी पार्श्व प्रभुवर तेरा, कुछ भी ना वह कर पाया।
अपने ही हाथों से वह तो, अपने ऊपर खड्ग चलाया।।32।।

कमठासुर ने महाभयानक, धारी नर मुण्डन माला।
और गगन से निकल रही थी, नभ चुम्बी अग्नि ज्वाला।।
भंग तपस्या को करने वह, भूत प्रेत बहु दौड़ाया।
न बिगड़ा प्रभु पारस तेरा, स्वयं कर्म से जकड़ाया।।33।।

हे प्रभु तेरे चरण कमल में, विधिवत आते तीनों काल।
प्रमुदित होकर भक्ति करते, तजकर माया का जंजाल।।
धन्य, धन्य वे प्राणी जग में, जो करते पूजा तेरी।
आराधन कर पाद पदम की, मेटे भव भव की फेरी।।34।।

हे मुनीन्द्र! मैं कई जन्मों से, दुख उठाता आया हूँ।
फिर भी कानों से ना प्रभुवर, आप नाम सुन पाया हूँ।।
जो भी ध्यान लगाकर तेरा, मंत्रोच्चारण सुनता है।
विषधर विपदाओं का उसको, कभी नहीं डस सकता है।।35।।

हे नाथ आपके चरण युगल में, कई जन्मों से ना आया।
मन वांछित फल देने वाले, ना तेरी पूजाकर पाया।।
इसलिए जगति प्राणी मम, हिय भेदी करते अपमान।
हे मुनीश! तेरे सम्मुख रह, पा जाऊँ फिर से सम्मान।।36।।

मोह तिमिर से आच्छादित थे, ना खोले मैंने लोचन।
एक बार भी निश्चय-पूर्वक, नहीं किये तेरे दर्शन।।
इसलिए प्रभु मर्म भेदी दुःख, मुझको अति ही सता रहे।
पूर्व जन्म में दर्श किया ना, उसका फल यह बता रहे।।37।।

हे प्रभु तेरे श्री चरणों की, दर्शन पूजन को आया।
नाम आपका सुना बहुत पर, मन से ना तुमको ध्याया।।
दुःखों का मैं पात्र बना हूँ, भाव शून्य करके भक्ति।
बिना भाव के क्रिया कदापि, फल नहीं देती है उक्ति।।38।।

हे नाथ दुःखीजन वत्सल हो, तुम शरणागत के प्रतिपालक।
करुणा की हो पुण्य मूर्ति तुम, इन्द्रियजेता जग नायक।।
हे महेश! भक्तिपूर्वक मैं, आप चरण में झुकता हूँ।
मेरे दुःख को दूर करो, मैं यही प्रार्थना करता हूँ।।39।।

हे अनन्त गुण धारक भगवन, जगति को करते पावन।
शरणागत के रक्षक हो तुम, कर्म शत्रु का किया हनन।।
तेरे पद पंकज में रहकर, ध्यान हीन फल रहित हुआ।
इसीलिए हे प्रभुवर मैं तो, कर्मों द्वारा दुखित हुआ।।40।।

अखिल विश्व के ज्ञाता दृष्टा, इन्द्रों द्वारा वन्दित हो।
भव तारक हो आप प्रभु और, तीन लोक के स्वामिन हो।।
करुणा सागर आप देव हो, आओ दुःखी को निस्तारों।
महा भयंकर दुःख अर्णव से, पावन करके पार उतारो।।41।।

हे शरणागत के प्रतिपालक, आप शरण में हूँ आया।
तेरे चरणों की भक्ति से, किञ्चित हमने पुण्य कमाया।।
उसका फल गर देना चाहो, तो इतना-सा फल देना।
इस भव पर भव में केवल, प्रभु मम स्वामी तुम ही रहना।।42।।

हे जिनेन्द्र जो भव्य पुरुष है, सावधान मति से आते।
निर्मल तेरे मुख अम्बुज को, अपना ही वे लक्ष्य बनाते।।
सघन रूप से उठे हुए, रोमांचों से तन व्याप्त किए।
विधि-पूर्वक थुति रचते उनकी, कर्म काटकर आप्त हुए।।43।।

प्राणी मात्र के नयन कमल को, विकसाने वाले चन्द्रेश।
स्वर्ग सम्पदा को पाने वे, सहसा करते स्वर्ग प्रवेश।।
किञ्चित काल वे भोग-भोग कर, नरगति को पा जाते हैं।
अष्ट कर्म को शीघ्र नाशकर, मोक्ष निकेतन पाते हैं।।44।।

दोहा

पार्श्वनाथ भगवान के, गुण हैं अपरम्पार।
'सौरभ सागर' नत हुए, गा गा मंगलाचार।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

अर्हंतों की ॐ ध्वनि का, द्वादशांग में सार है।
तीर्थंकर परमेष्ठी वाणी, करती जग उद्धार है।।
जिनवाणी का अक्षर - अक्षर, मंत्र रूप हो जाता है।
पत्रों पर अंकित होकर के, द्रव्य ग्रन्थ कहलाता है।।

आगम के त्रय अक्षर हमको, ''आप्त'' ध्वनि बतलाते हैं।
"गणधर" द्वारा भाव ग्रन्थ रच, द्वादशांग कह जाते हैं।।
म अक्षर "मुनियों" का वाचक, द्रव्य ग्रन्थ प्रस्तुत कर्ता।
षट्खण्डागम् जय हो तेरी, पूजा कर सब दुख हर्ता।।

श्री लघु चौबीसी पूजन (विधान)

स्थापना

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान॥
हे शीतल प्रभु शीतल करदो, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल॥
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा॥
चौबीसों जिनराज हमारे, आज पुकारूँ करुणा धार।
अत्र पधारो हृदय विराजो, कर्म खपाओ हे अविकार॥
तीर्थंकर हे धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से पूजा करता, मम विनती स्वीकार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जग की ज्वाला में जल जल कर, जीवन व्यर्थ गवाया है।
जल की धारा चरण कमल दें, जन्म जरा विनशाया है॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जलधारा स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन चुटकी ले आया प्रभु, वन्दन भाव जगा करके।
शीतल सुरभित मन हो जाए, पूजा पाठ रचा करके॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, चन्दन यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

उज्ज्वल तन्दुल भाव मृदुल कर, श्री जिन सम्मुख ले आऊँ।
अक्षय निधी अक्षय संयम धर, सिद्धालय को पा जाऊँ।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, अक्षत यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षय-पदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

हृदय कमल कोमल करुणामय, काम बाण से रहित करो।
इन्द्रिय भोग तजूँ मैं जिनवर, ब्रह्मभाव को उदित करो।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, पुष्पाञ्जलि स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

इच्छाओं को दूर भगाया, नित उपवास किया करते।
क्षुधा वेदिनी नाश करन को, अन्नपान तजा करते।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, नैवेद्यम् स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्यातम में फँसा रहा पर, अन्तर दीप न जल पाया।
तेरी अनुपम दिव्य ज्योति से, अन्तर मन उज्ज्वल छाया।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जगमग दीप स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

दीक्षा लेकर महा तपस्या, करते चौबीसों मुनिराज।
योग साधना निजानन्दमय, अद्‌भुत अनुभूति निजसाध।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, धूपं यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तरुवर फल तन पुष्ट करावें, बाहर बढ़ता फलता है।
अन्तर मन का मोक्ष महाफल, भक्ति ध्यान से मिलता है।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, श्रद्धा फल स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्ष-महाफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक

(चौपाई)

सोलह कारण भावना भाई, दया धर्म मन में प्रकटाई।
सोलह स्वप्न शगुन दर्शाता, पन्द्रह माह रतन बरसाता।।

तीर्थंकर का एक ही क्रम है, नाहीं संशय ना विभ्रम है।
गर्भ विषे जो जीव पला है, तीर्थंकर जग जीव भला है॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो गर्भ-मंगल-मण्डिताय मम-गर्भ-दोष-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट देवीयाँ मंगल गाये, माता की सेवा चित लाये।
जन्म हुआ प्रभु का धरती पर, सुख शान्ति त्रय लोक में क्षणभर॥
देव इन्द्र सौधर्म भी आये, पाण्डुक वन अभिषेक कराये।
चिह्न लखा अरुँ नाम पुकारा, जन्म कल्याणक अति सुख कारा॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्ममंगल-मण्डिताय मम-जन्मरोग-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगति के इन्द्रिय सुखभोगे, राज काज सब नित अवलोके।
पूर्व जन्म की यादें आई, या घटना ने भाव जगाई॥
लौकान्तिक सब देव भी आए, मनहर शिविका में बिठलाएँ।
छोड़ दिया नश्वर संसारा, भेष दिगम्बर अनुपम धारा॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो तपोमंगल-मण्डिताय मम-चारित्र-वर्धनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षों जंगल में तप कीना, कभी कभी आहार है लीना।
धर्म गृहस्थी या संन्यासी, पथ दोनों दे तप अभ्यासी॥
पद्मासन खड्गासन रहते, परिषहों को हर क्षण सहते।
शुक्ल ध्यान चउ कर्म नशाया, केवलज्ञान कल्याण मनाया॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो केवलज्ञान-मण्डिताय मम-कुज्ञान-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय योगों से मुक्त हुए हो, ध्यान अवस्था युक्त हुए हो।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति ध्याना, व्युपरत किरिया अरि सब हाना॥
अ-इ-उ-ऋ-लृ लघु शब्दा, कर्म जला तत्क्षण प्रभु सिद्धा।
निराकार चैतन्य प्रकाशी, चरण नमें पाने सुख राशि॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षमंगल-मण्डिताय मम-सर्व-कर्म विध्वंसनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घावली

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

आदिनाथ प्रथमेश जिन, धर्म कर्म दातार।
भव वारिधी से पार कर, मेटो मम संसार॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मधुरा धारी प्रभु, धर्म बढ़ावें रोज।
अजितनाथ भगवान के बन्दूँ चरण सरोज॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ्य

संभव सम भव अन्त हो, पाऊँ सिद्ध स्वभाव।
भावों में समभाव हो, तजूँ विकारी भाव॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्घ्य

अभिनन्दन वन्दन करूँ, क्रन्दन कर्म नशाय।
जग बन्धन को तोड़कर, सिद्धालय को पाय॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

मिथ्यावाद को दूर कर, स्याद्वाद प्रगटाय।
दुर्बुद्धि दुर्ध्यान तज, सुमतिनाथ शिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

पद्मासन बैठे प्रभू, आतम पद्म खिलाय।
पद्म खिले निज ध्यान का, पद्म प्रभु सिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

वीतराग निज ज्ञान में, झलके तीनों लोक।
तत्व प्रकाशक महामुनि, चरण सुपारस धोक॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान का अर्घ्य

अखिलेश्वर हे महाव्रती, तीर्थ प्रवर्तक आप।
धवल वर्ण तन आत्मा, चन्द्र प्रभु निष्पाप॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्घ्य

भव भंजक भगवान हैं, पुष्पदंत शुभ नाम।
मगर चिह्न तन श्वेत है, शत शत करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मामृत का दान दे, शीतल शिवपद पाय।
मम आतम शीतल करे, छोड़े विषय कषाय॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

जय जय श्रेयांशम तव गुण पासं, कर्म विनाशं भक्ति करम्।
पावन पद बन्दों जय जिन चन्दों, कृपा करिंदो शान्ति प्रदम्॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

पाँचों कल्याणक महा, चम्पापुर में पाय।
बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराय॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

बाहर भीतर स्वच्छता, विमल अमल गुणवन्त।
अर्घ चढ़ाकर पूजता, पाने पद अरहन्त॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

सुख अनन्त पाया प्रभु, कर कर कर्मन अन्त।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, अनन्तनाथ भगवन्त।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

ध्वनि सुनि ध्रुवधाम की, धैर्य धर्म प्रगटाय।
ध्याता बन निज ध्येय को, धर्मनाथ सम ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

जय त्रिभुवन नायक आतम ज्ञायक, कर्म विनाशक शान्ति नमो।
जय शिवपुरवासी ज्ञान प्रकाशी, धर्म विकासी शान्ति नमों।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ भगवान का अर्घ्य

कर्म जहर निज आत्मा, मरण देय भटकाय।
भक्ति कुन्थुनाथ की, सर्व जहर विनशाय।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान का अर्घ्य

दर्पण में मुख रूप लख, भूला आत्म स्वरूप।
अरहनाथ सर्व दर्प हर, पाया चिन्मय रूप।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

हे लेश्या तीता भव्या मीता, परम पुनीता मल्लि जिनेश।
जय आत्म विहारी बाल ब्रह्मचारी, आरती उतारी भक्ति विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

शत इन्द्रों ने भक्ति कर, नाशा भव भटकाव।
मुनिसुव्रत की अर्चना, देवे निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

नमिनाथ नमता रहूँ, नम्र भाव मन धार।
अहंकार सब मेट कर, धारूँ शुद्ध विचार॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

पशु बन्धन को देखकर, धार लिया वैराग्य।
सर्वदर्शी नेमी प्रभु, नमन जगावे भाग्य॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

क्षायिक नव लब्धि महा, योग निरोध कर पाय।
पार्श्व प्रभु की वन्दना, पाऊँ निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य

शासन नायक वीर जिन, अनेकान्त सरताज।
समवशरण सन्देश दे, पाया मुक्ति राज॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी का अर्घ्य

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरुवर पावन दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्री मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आदि जिनेश्वर जग हितकारी, अजित नाथ जित कर्म विकारी।
संभव भव का नाश किया है, अभिनन्दन जग जान लिया है॥
सुमतिनाथ सन्मार्ग प्रदाता, पद्म प्रभु जी जग विख्याता।
नाथ सुपारस जय हो तेरी, चन्द्रप्रभु काटो भव फेरी॥
पुष्पदन्त श्री जिनवर नामा, शीतल शीतलता ध्रुव धामा।
श्रेयनाथ गुण दया निधाना, वासुपूज्य पूजित अविरामा॥
विमलनाथ निर्मलता धारी, है अनन्त अक्षय सुखकारी।
धर्मनाथ जिन धर्म बढ़ावें, शान्तिनाथ मन शान्त करावें॥
कुन्थुनाथ जी काम विजेता, अरहनाथ त्रिपद के नेता।
मल्लिनाथ सब शल्य मिटावें, मुनिसुव्रत व्रत में तिष्ठावें॥
नमिनाथ को नमन हमारी, नेमिनाथ दुख संकटहारी।
पारसनाथ सदा ही ध्याऊँ, महावीर पद शीश नवाऊँ॥

दोहा

चौबीसों के चरण में, वन्दन बारम्बार।
"सौरभ सागर" नित नमें, भक्तिभाव उरधार॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूणार्घं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य- ॐ ह्रीं वृषभादि वीराय नमः।

त्रिकाल चौबीसी प्रत्येक अर्घ

त्रिकालिक प्रथम तीर्थंकर

धर्म प्रवर्तक <u>आदिनाथ</u> जी, चिन्मय मूरत प्रथम जिनेश।
तीर्थंकर <u>निर्वाण</u> भूत के, प्रारंभिक ज्ञायक अखिलेश॥
आने वाले <u>महापद्म</u> जी, धर्म ध्वजा फहरायेगें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, प्रथम तीर्थंकर ध्यायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ निर्वाण महापद्म त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक द्वितीय तीर्थंकर

कर्म विजेता अजितनाथ जी, गज चिन्हाकिंत द्वितीय जिनेश।
सागर से गंभीर भूत के, तीर्थंकर है अपर महेश।।
नर सुर सेवित भावी जिनवर, श्री सुरदेव सदा सुखकार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर जय जयकार।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ, श्री सागर, श्री सुरदेव त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तृतीय तीर्थंकर

जग में संभव सब कुछ है जब, संभवनाथ कृपा बरसे।
महासाधु सा जीवन जीकर, ध्यान मग्न जीवन हरसे।।
आने वाले तीर्थंकर श्री, सुपार्श्वनाथ[1] कल्याण करें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर ध्यान धरें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ, महासाधु, सुपार्श्वनाथ त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चतुर्थ तीर्थंकर

मन मर्कट सा मचल रहा हो, अभिनंदन का जाप करें।
विमलप्रभ सा निर्मल मन कर, जीवन के संताप हरें।।
तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभ सम, स्वयं प्रभा प्रगटाऊंगा।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गुण गाऊंगा।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन, विमलप्रभ, श्री स्वयं प्रभ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तृतीय तीर्थंकर का सुरिप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक पंचम तीर्थंकर

सुमतिनाथ मति पाने को मन, सुमन सुमन ले नमन किया।
श्री श्रीधर[1] सम शुद्ध आत्म कर, सिद्धालय में गमन किया॥
सर्वात्मभूत जिन देव पांचवे, होने वाले तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूँ तीनों तीर्थंकर॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ, श्रीधर, सर्वात्मभूत तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक षष्टम तीर्थंकर

खिला कमल सा चिन्ह आपका, पद्मप्रभु पावन भगवान।
सुदत्तनाथ के समवशरण में, दिव्य ध्वनि खिरती अविराम॥
तीर्थंकर श्री देवपुत्र[2] जी, होवेंगें पुण्यार्थ नमूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक सदा नमूं॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु, सुदत्तनाथ, देवपुत्र तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सप्तम तीर्थंकर

स्वयं बोध स्वास्तिक से होता, नाथ सुपार्श्व का लांक्षन है।
कर्म रहित श्री अमलप्रभ[3] जी, सिद्धालय सुख हर क्षण हैं॥
कुल कीर्ति को बर्धित करने, वाले हैं कुलपुत्र[4] मुनि।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक त्रयों मुनि॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ, अमलप्रभ, कुलपुत्र नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-पंचम तीर्थंकर सर्वदुध नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-षष्टम तीर्थंकर जयदेव जी नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-सप्तम तीर्थंकर का सदल नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-सप्तम तीर्थंकर का उदयदेव जी का भी उल्लेख है।
   भूतकालीन तीर्थंकरः-नवम तीर्थंकर का आडिट नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक अष्टम तीर्थंकर

चंद्रमणि सम चंद्रकांति मय, चंद्रप्रभु जिनराज महान।
उद्धर जिन उद्धार कराते, सिद्धालय में ज्योतिर्मान॥
उदंकनाथ भावी तीर्थंकर, चरण वंदना नित्य करूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर का ध्यान करूं॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु, उद्धर जिन, उदंक देव तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक नवम् तीर्थंकर

भव भय भंजक पुष्पदंत प्रभु, भवोदधि के तारणहार।
भूतकाल के अंगिर जिनवर, पूजूं कर्मन नाशन हार॥
प्रोष्ठिल[1] है भावी तीर्थंकर, पायेंगे आगे निर्वाण।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर पूजूँ धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त, अंगिर, प्रोष्ठिल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक दशम तीर्थंकर

सुखदायक कल्याणक पाया, शीतल स्वामी तप करके।
भूतकाल के सन्मति देवा[2], सद्गति देवे भव हरके॥
जयकीर्ति जिनधर्म बढ़ाने, होंगे दशवें तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूं कर्म रहित जिनवर॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ, सन्मति देव, जयकीर्ति तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-नवम तीर्थंकर का प्रश्नकीर्ति जी का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-दशम तीर्थंकर का अग्निनाथ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक ग्यारहवें तीर्थंकर

घाति कर्म विनाशक जिनवर, नाम श्रेयांश है मंगलकार।
सिंधु[1] जिनवर बंदू अघहर, भव ध्वंसि गुण अपरंपार॥
पूर्ण बुद्ध हो मुनिसुव्रत[2] जी, नामधारी भावी जिनराज।
भूत भविष्यत वर्तमान जिन, पूजू निजानंद ध्रुवराज॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांश नाथ, सिंधुनाथ, मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बारहवें तीर्थंकर

वासुपूज्य ब्रह्मचारी जिनवर, सिद्धालय में रहे विराज।
कुसुमांजलि तीर्थंकर पूजूँ, भूतकाल के हे जिनराज॥
निष्कामी अर[3] अमल जिनेश्वर, नित्य सुखाश्रित बसते है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक कहते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, कुसुमंजलि, अरनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेरहवें तीर्थंकर

विमल भाव ले विमलनाथ के, विमल गुणों का गान करें।
शिवगण नायक आतम ज्ञायक, जिनवर का सम्मान करें॥
कर्म रहित निष्पाप नाम के, भावी तीर्थंकर जय कार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म शिरोमणि जग हितकार॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ, शिवगणनाथ, निष्पाप नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-ग्यारहवें तीर्थंकर का सयंम नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-ग्यारहवें तीर्थंकर का पूर्णबुद्ध नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-बारहवें तीर्थंकर का अरअहम नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक चौदहवें तीर्थंकर

जय भगवंतं नाथ अनंतम, पार किये चौदह गुणथान।
राग द्वेष मद मोह विनाशी, तीर्थंकर उत्साह[1] महान॥
निष्कषाय[2] भावी तीर्थंकर, स्वयं स्वयंभू कहलाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रैकालिक तीर्थंकर ध्याय॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ, उत्साह नाथ, निष्कषाय नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंद्रहवे तीर्थंकर

वस्तु का स्वभाव धर्म है, धर्मनाथ की वाणी है।
ज्ञानेश्वर[3] तीर्थंकर का शुभ, नाम आत्म कल्याणी है॥
विपुल[4] तपस्या विमल भाव से, भावी तीर्थंकर करते।
भूत भविष्यत वर्तमान के, हितकारी जिनवर भजते॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ, ज्ञानेश्वर नाथ, विपुलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सोलहवें तीर्थंकर

समरस भावों से समता रख, शान्तिनाथ जिनवर ध्याते।
परमेश्वर[5] के परम पदों में, प्रतिदिन नमनान्जलि लाते॥
निर्मल नाथ है भावी भगवन, निर्मलता दे जायेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ चढ़ायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ, परमेश्वर नाथ, निर्मलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-चौदहवें तीर्थंकर का उत्सव नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-चौदहवें तीर्थंकर का स्वयंभू नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-पन्द्रहवें तीर्थंकर का यशोधरा नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-पन्द्रहवें तीर्थंकर का विमलप्रभ नाम का भी उल्लेख है।
5. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-सोलहवें तीर्थंकर का बदल नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सत्रहवें तीर्थंकर

जग की क्षण भंगुरता जाना, कुंथुनाथ जग छोड़ गए।
विमलेश्वर[1] वैराग्य धारकर, जगती से मुख मोड़ गये॥
चित्रगुप्त न जीवन लिखते, ये भावी तीर्थंकर है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ समर्पण है॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ, विमलेश्वर, चित्रगुप्त नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अठारहवें तीर्थंकर

मछली सा चंचल यौवन है, अरहनाथ जी जान गए।
नाथ यशोधर तीर्थंकर है, जीवन को पहचान गए॥
समाधि गुप्त भावी तीर्थंकर, सन्यासी महिमा गाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म प्रवर्तक गुण गाये॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ, वर्धमान नाथ, समाधीगुप्त तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक उन्नीसवे तीर्थंकर

कलश चिन्हधारी प्रभुवर जी, मल्लिनाथ सब क्लेश हरें।
कृष्णमती के समवशरण में, भव्य जीव प्रवेश करें॥
स्वयं स्वयंभू नाथ हितैषी, भावी श्री भगवान बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को सदा नमै॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ, कृष्णमती, स्वयंभूनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-सत्रहवें तीर्थंकर का विनयेश्वर नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक बीसवे तीर्थंकर

मुनियों का व्रत मुनीसुव्रत ले, मुनियो के मुनि नाथ बने।
ज्ञानमती केवल ज्ञानी जिन, समवशरण सुरनाथ नमें।।
अनिवर्तक शुभ धर्म प्रवर्तक, भावी तीर्थंकर ध्याये।
भूत भविष्यत वर्तमान के, समवशरण धारी ध्याये।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ, ज्ञानमती, अनिवर्तक नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक इक्कीसवे तीर्थंकर

विश्व विलोकी अरिकुल नाशक, नमिनाथ जय भगवंता।
शुद्धमति तीर्थंकर हितकर, नमूं नमूं जय अरिहंता।।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, गुण धारी जयनाथ बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म धुरंधर चरण नमैं।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ, शुद्धमती, जयनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बाईसवें तीर्थंकर

बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, नेमिनाथ गिरनार चढ़े।
भूतकाल के भद्रनाथ जी, शुद्ध भाव धर मोक्ष चढ़े।।
विमलनाथ भावी तीर्थंकर, विमल भाव से पूजेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ, भद्रनाथ, विमलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेईसवे तीर्थंकर

पारस ने उपसर्ग सहा था, केवल ज्ञान मिला उपहार।
अतिक्रांत[1] जी है अतीत के, दीन दयालु धर्माधार॥
देवपाल देवाधिदेव जी, तीर्थंकर है दीनदयाल।
भूत भविष्यत वर्तमान को, अर्घ चढ़ाऊं भर भर थाल॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ, अतिक्रांत नाथ, देवपाल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौबीसवें तीर्थंकर

वर्तमान के वर्धमान जिन, शासन नायक तारणहार।
शांतिनाथ[2] जी देव हमारे, भूतकाल के करुणा धार॥
अनंतवीर्य जी तीर्थंकर पर, भावी काल में होवेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान, शान्तियुक्त नाथ, अनंतवीर्य तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तेईसवें तीर्थंकर का अनंतवीर नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–चौबीसवें तीर्थंकर का शांतास् नाम का भी उल्लेख है।

अर्घ्यावली

समुच्चय अर्घ

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली

(चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली पृष्ठ नं. 59 पर देखें)

चौबीस निर्वाण भूमि अर्घ्य

तीरथ है सम्मेद शिखर जी, बीस पधारे श्री निर्वाण।
आदिनाथ कैलाशगिरी से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।।
नेमिनाथ गिरनार शिखर से, निराकार पद पाया है।
पावापुर महावीर प्रभु ने, आठों कर्म नशाया है।।

तीर्थंकर चौबीसो जिनवर, परम धाम को पाये हैं।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर श्रद्धा शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणस्थली श्रीसम्मेदशिखर-गिरनार-कैलाशगिरि चम्पापुर-पावापुर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ जिनवाणी अर्घ

दिव्य ध्वनि का निर्मल जल ले, तत्वों का चन्दन लाया।
अंग पूर्व का अक्षत लेकर, धर्म पुष्प मन खिलवाया।।
नय निक्षेप का नेवज लेकर, गुणस्थान का दीप जला।
अष्ट कर्म का धूम उड़ाया, निराकार फल मोक्ष मिला।।
चारों अनुयोगों से पूरित, जिन आगम को जान रहे।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर, जिनवाणी सम्मान करें।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायैः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों का अर्घ्य

तीन घटाकर नौ करोड़ की, संख्या मुनिवर की जानो।
धरती पर जीवन्त जिनेश्वर, उन पर श्रद्धा हित मानो।।
तपसी जल से भिन्न कमल वत्, जीवन अपना जीते हैं।
ढाई द्वीप के मुनिराज को, अर्घ समर्पित करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-तीन-कम-नौ-करोड़-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी का अर्घ्य

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

जल से घुलते कर्म हमारे, चन्दन से मिलती शीतलता।
पुंज चढ़े जब गुरु चरणों, में पुष्प सुगन्धित है देता।।
नैवेद्य चढ़ाकर क्षुधा नशाऊँ, निज ज्ञान का दीप जलाऊँ मैं।
धूप चढ़ाकर कर्म जलाऊँ, फल से मोक्ष फल पाऊँ मैं।।
आठों द्रव्यों को एक मिलाकर, गुरुवर के गुण गाऊँ मैं।
भव भव के सब पाप नशे, अरिहंत अवस्था पाऊँ मैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी आचार्यश्री सौरभ सागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो अन्घर्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भावसों।।1।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गणी।
पूजूँ दिगम्बर-गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म-दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश-रत्नत्रय जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नंदीश्वर, जिनालय खचर, सुर, पूजित भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।

चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जपि होय पति शिवगेह के॥6॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय॥7॥

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंच परमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यनुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जल के विषैं थल के विषैं आकाश के विषैं गुफा के विषैं पहाड़ के विषैं नगर नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वरद्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कार जी श्रीमहावीरजी पद्मपुरी तिजारा बड़ागाँव पुष्पगिरी, सौरभांचल पार्श्वनाथ, मंशापूर्ण महावीर आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः, ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षत्रे आर्यखंडे.....नाम्निे नगरे मासानामुत्तमे..... मासे.....शुभे.....पक्षे शुभ.....तिथौ..... .....वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ! मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत, संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजें।।1।।

पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमौं शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजौं सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघ को।।4।।

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इंद्रादिदेव अरुँ पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत् प्रदीप, मेरे लिए करहु शांति सदा अनूप।।5।।

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे।।6।।

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।

होवे चोरी न जारी, सुसमय वरषे हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।7।।

घाति कर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करें सब जगत् में, वृषभादिक जिनराज।।8।।

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तौं का, सुजस कहके, दोष ढाँकू सभी का।।9।।

बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौ सेऊँ, चरण जिन के मोक्ष जौ लौ न पाऊँ।।10।।

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहे प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने॥11॥

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से॥12॥

हे जगबंधु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥13॥

विसर्जन पाठ (हिन्दी)

बिन जाने या जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन भी नहीं, क्षमा करो भगवान्॥
मंत्र हीन धन हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥
आए जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते अब जावहु कृपा कर, अपने अपने थान॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि

(इसके पश्चात् खड़े होकर आरती करें)

आसिका लेने का पद

श्री जिनवर जी की आसिका, लीजे शीश चढ़ाए।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाए॥

(स्तुति या भजन आदि बोलते हुए वेदी सहित प्रतिमाजी की तीन प्रदक्षिणा देकर धोक देनी चाहिए)

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

पार्श्वनाथ चालीसा

शीश नवाँ अरिहन्त को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम।।
सर्वसाधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
अहिच्छत्र और पार्श्व को, मनमन्दिर में धार।।

॥ चौपाई ॥

पारसनाथ जगत हितकारी हो, स्वामी तुम व्रत के धारी।
सुर नर असुर करें तुम सेवा, तुम ही सब देवन के देवा।।
तुमसे करम शत्रु भी हारा, तुम कीना जग का निस्तारा।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।।
काशीजी के भूप कहाए, सारी परजा मौज उड़ाए।
इक दिन सब मित्रें को लेके, सैर करन को वन में पहुँचे।।
हाथी पर कसकर अम्बारी, इक जंगल में गई सवारी।
एक तपस्वी देख वहाँ पर, उससे बोले वचन सुनाकर।।
तपसी! तू क्यों पाप कमाए, इस लक्कड़ में जीव जलाए।
प्रभु ने तभी कुदाल उठाया, उस लक्कड़ को चीर गिराया।।
निकले नाग नागनी कारे, मरने को थे निकट विचारे।
रहम प्रभु के दिल में आया, तभी मन्त्र नवकार सुनाया।।
मरकर वो पाताल सिधाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाये।
तपसी मरकर देव कहाया, नाम कमठ ग्रन्थों में गाया।।
एक समय श्री पारस स्वामी, राज छोड़कर वन की ठानी।
तप करके सब करम खपाये, इक दिन कमठ वहाँ पर आये।।
फौरन ही प्रभु को पहिचाना, बदला लेने को दिल ठाना।
बहुत अधिक बारिस बरसाई, बादल गरजे बिजली गिराई।।
बहुत अधिक पत्थर बरसाए, स्वामी तन को नहीं हिलाए।
पद्मावती धरणेन्द्र भी आये, प्रभु की सेवा में चित लाये।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर स्वामी को बैठाया।

धरणेन्द्र ने फण फैलाया, प्रभु के सर पर छत्र बनाया॥
यह जगह अहिच्छत्र कहाए, पात्र केशरी जहाँ पर आए।
वह पण्डित ब्राह्मण विद्वाना, जिनको जाने सकल जहाना॥
शिष्य पाँच सौ संग में आये, सब ब्राह्मण कट्टर कहलाये।
पार्श्वनाथ का दर्शन पाया, सबने जैन धर्म अपनाया॥
अहिच्छत्र थी सुन्दर नगरी, जहाँ सुखी थी परजा सगरी।
राजा श्री वसुपाल कहाये, वो इक जिन मन्दिर बनवाये॥
प्रतिमा पर पालिश करवाया, फौरन इक मिस्री बुलवाया।
वह मिस्री मांस खाता था, इससे पालिश गिर जाता था॥
मुनि ने उसे उपाय बताया, पारस दर्शन व्रत करवाया।
मिस्री ने व्रत पालन कीना, फौरन ही रंग चढ़ा नवीना॥
गदर सत्तावन का किस्सा है, इक माली को यों लिखा है।
माली एक प्रतिमा को लेकर, झट छुप गया कुए के अन्दर॥
उस पानी का अतिशय भारी, दूर होय सारी बीमारी।
जो अहिच्छत्र हृदय से ध्यावे, सो नर उत्तम पदवी पावे॥
पुत्र सम्पदा की बढ़ती हो, पापों की एकदम घटती हो।
है तहसील आँवला भारी, स्टेशन पर मिले सवारी॥
रामनगर इक ग्राम बराबर, जिसको जानें सब नर नारी।
चालीसे को चन्द्र बनाये, हाथ जोड़कर शीश नवाये॥

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, अहिच्छत्र में आय के॥
होय कुवेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं सन्तान, नाम वंश जग में चले॥
खास दासकी आस बस, श्वास श्वास पर वास।
पार्श्व करो मत दासको, उदासता का दास॥
ना तो सुर-सुख चाहता, शिव सुख की ना चाह।
तव थुति सरवर में सदा, होवे मम अवगाह॥

जापः- ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्ता मणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

आरती श्री पार्श्वनाथ स्वामी

ॐ जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा।
सुर नर मुनिजन तुम चरणन, की करते नित सेवा।।टेर।।

पौष बदी ग्यारस काशी में, आनन्द अति भारी।
अश्वसेन घर वामा के उर, लीनो अवतारी।।ॐ जय.।।

श्यामवरण नव हस्त काय पग, उरग लखन सोहे।
सुरकृत अति अनुपम पटभूषण, सबका मन मोहे।।ॐ जय.।।

जलते देख नाग नागिन को, मंत्र नवकार दिया।
हरा कमठ का मान ज्ञान का, भानु प्रकाश किया।।ॐ जय.।।

मात पिता तुम स्वामी मेरे, आश करूं मैं किसकी।
तुम बिन दूजा और न कोई, शरण गहूँ मैं जिसकी।।ॐ जय.।।

तुम परमात्म तुम अध्यातम, तुम अन्तरयामी।
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता, त्रिभुवन के स्वामी।।ॐ जय.।।

दीनबन्धु, दुखहरण जिनेश्वर, तुम ही हो मेरे।
दो शिवपुर का वास, दास हम द्वार खड़े तेरे।।ॐ जय.।।

विपद विकार मिटावो, मन का अर्ज सुनो जी दाता।
'सेवक हाथ' जोड़ कर प्रभु के, चरणों चित्त लाता।।ॐ जय.।।

जिनेन्द्र भगवान की पूजा से उत्पन्न पुण्य प्रथम है सुपात्र को दान देने से उत्पन्न पुण्य दूसरा पुण्य है व्रतों के पालन द्वारा पुण्य तीसरा पुण्य है उपवास करने से चौथा पुण्य है इस प्रकार पुण्यार्थी को पूजा दान व्रत तथा उपवास के द्वारा पुण्य का उपार्जन करना चाहिए।

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

हृदय कमल में अर्हत पद का स्थापन जो है करना,
कार्मन काठ जलावन कारण अग्नि ज्वाला है बनना।
निर्मल है वह निर्मल करता अर्हत पद का दाता,
बारम्बार नमूँ मैं उनको, पाऊँ अक्षय साता।
हृदय कमल की आठ पँखुड़ी उनमें क्रम से रखना,
अर्हत, सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु सर्व विचरना।
सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र उचरना,
ऐसे आठों पूज्यनीय को, चित में फिर फिर धरना।
ऊँ बीजाक्षर प्रथम उचारै, नमः पल्लव करिये,
ध्यान धरै इन आठों पद का, आनन्द उर में भरिये।
अरहंत पद का ध्यान किये से, सिर की रक्षा होवे,
सिद्ध समूह जपन करने से, मस्तक रक्षित होवे।
सूरि सुगुण मन में ध्याने से, नेत्र सुरक्षित होवे,
चौथे पद के गुण चिंतन से, घ्राण सुरक्षित होवे।
मुख की रक्षा करे साधुगण, दर्शन गर्दन रक्षै,
नाभि रक्षे सप्तम पद, जो सम्यग्ज्ञान सुदक्षै।
सम्यक्चारित्र सर्व अंग को, पाद पर्यन्त सुरक्षे,
ऐसे सकलीकरण करन से, होवे पूजक अक्षै।
ऋषि मण्डल यह पूजन भारी, इसको विधि से करिये,
विघ्नविनाश करें सुखदाता, श्री ब्रह्मचारी उचरियें।

सब द्वीपों के मध्य जम्बूद्वीप बसे,
उसकी है आठ दिशा पूरब आदि लसे।
अर्हंतादि पद आठ उनमें राजत हैं,
करिये उनका ध्यान पाप पलावत है।
मध्य सुदर्शन मेरु कंचनमय सोहे,
उपरि सिंहासन माहि अक्षर ह्रीं मोहे।

उनमें चौबीस जिनेश उनके गुण भारी,
अक्षय निर्मल शांत ताप जाड्य हारी।
निरहंकार निरीह सार, सार गुण सोहे,
सौम्य शुद्ध शुभ रूप तीन लोक मोहे।
तीन लोक के स्वामी यातें राजस है,
कर्म घातिया चूरे यातैं तामस है।
सदगुण से भरपूर सात्विक सोहत है,
ज्ञान तेज से सूर्य भ्रमतम खोवत है।
रूपगंध रस वर्ण इनसे दूर रहे,
तो भी है साकार समरस पूर रहे।
पर को दिया त्याग निज रस में पागे,
परमौदायिक देह आतम गुण जागे।
चूरे है सब कर्म तन को है छोड़ा,
निज रस पी संतुष्ट पर से मुँह मोड़ा।
करी कालिमा दूर आकांक्षा पूरी,
संशय रहा न लेश सब आशा पूरी।
ईश्वर ब्रह्मा बुद्ध ज्योति रूप खड़े,
शाश्वत सिद्ध स्वरूप सब में देव बड़े।
लोकालोक प्रकाश करते नाहि थके,
ऐसे श्री ह्रीं देव मेरे मन में धरे।
एक वर्ण दो वर्ण तीन वर्ण धारी,
चार पाँच हैं वर्ण सब के अधिकारी।
ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकर सब ही,
ध्याओ उनको नित्य जैसे निम्न कही।
अर्ध चंद्र आकार ह्रीं का नाद कहा,
उसका वर्ण है श्वेत जैसे चन्द्र महा।
उसमें ध्याओ देव श्वेत वर्ण वाले,
चन्द्रप्रमु पुष्पदंत सब के रखवाले।
श्याम वर्ण की देह बिंदी की कीजै,
उसमें लिखिये नेमि मुनिसुव्रत कीजै।

मस्तक ऊपर भाग लाल वर्ण सोहे,
पद्मप्रभु वासुपूज्य अरुँण वर्ण मोहे।
शिर संलीन ईकार नीलम वर्ण कहा,
सुपार्श्व पार्श्व महाराज थापूँ पूज्य महा।
सोलह श्रीजिन देव कंचनमय देहा,
वे-ह-र मध्य लिखेय होवे सुखगेहा।
रागद्वेष मद मोह जीते इन सबने,
मायालीन में ये राजत हैं सब रे।
इनका सदा ध्यान किये जो ज्वाला निकले,
उनमें वेष्ठित देह मेरी जो उजले
तब नाही विषधर जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
श्री ऋषिमण्डल मध्य ह्रीं का परिकर है,
उसमें रक्षित देह मेरी सुखकर है।
तब नाहिं नागिन जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
सर्वऋद्धि के ईश अर्हत गणधर हैं,
उनके तेज से लोग वेग सब ही व्याप्त है।
उनका ध्यान किये परम सौख्य होगा,
विलय जायेंगे दु:ख मेरे अति वेगा।
पाताल, लौकिक देव, मध्य लोकवासी,
निर्जर ऊरघ लोक सब विमानवासी।
तुम सब ही जिन भक्त साधर्मी भाई,
करना मेरी सहाय सुनिये मनलाई।
मुनिवर है जगमाहिं अवधि श्रुतधारी,
विक्रिया चारण आदि सब ही ऋद्धिधारी।
मुझ पर कीजै कृपा तुम रक्षक सबके,
अतएव पूजूँ पायें विघ्न हरो जनके।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ।।
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों।।
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों।।1।।
श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया।।
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा।।2।।
महामना हे महामुनि हे, महायोगी महाज्ञानी हो।
महाशक्ति हे महाज्योति हे, महाप्रभु महादानी हो।।
महाव्रतों को महाभाव से, महावीर ने धार लिया।
मंशापूरण महावीर बन, मानव का उद्धार किया।।3।।
भावों की शुभ निर्मलता ही, भव बन्धन को नित काटें।
निज स्वभाव में रम जा चेतन, खोल राग की सब गाठें।।
भाव-साधना-भाव-समाधी, भाव स्वभाव मे लीन रहें।
द्रव्य भाव द्वय अर्घ्य समर्पित, श्रद्धालय में लीन रहें।।4।।
अन्तिम गर्भ हो चरमोत्तम तन, महावीर-सा बन जाऊँ।
महाअर्घ चरणाम्बुज देकर, वज्र कर्म सब विनशाऊँ।।
तीर्थंकर का गर्भाराधन, गर्भ दोष का नाश करे।
त्रय ज्ञानी समकित तीर्थंकर, धर्मात्मक उल्लास भरे।।5।।
जन्म काल का अतिशय सुखकर, तीर्थंकर ही पाते हैं।
कल्याणक शुभ जन्म मनाकर, नर देवा हर्षाते हैं।।
जन्म मरण की भ्रमण शृंखला, तब पूजा से घट जाये।
अर्घ समर्पित तव चरणों में, मोह तिमिर सब छट जाये।।6।।
वर्धमान अतिवीर वीर जिन, महावीर शुभ नाम कहो।
सद्बुद्धि सन्मार्ग प्रदाता, सन्मति का गुणगान अहो।।
राग-द्वेष मद लोभ मोह सब, नामोच्चारण दूर करें।
अर्घ समर्पित मंशापूरण, धर्मभाव भरपूर भरे।।7।।

दीर्घ साधना कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान से नित साधें।
तन मन की इच्छा ज्वाला को, शुक्ल ध्यान जल से नाशें॥
महावीर की वीतरागता, निर्मल-निच्छल-मनहारी।
पूर्णअर्घ चरणों मे अर्पित, वर्धमान दीक्षाधारी॥8॥
केवलज्ञानी अतिशय धारी, चार घातियाँ नाश किया।
प्रातिहार्य आठों सज्जित है, समवशरण प्रवास किया॥
विपुलाचल वैभार गिरी या, पुण्यवान जग जीव जहाँ।
दर्शन पूजन व्रत उपदेशा, पाकर तिरते जीव यहाँ॥9॥

दोहा– **अल्पज्ञान लब्ध्यक्षरा, पूरण केवल ज्ञान।**
महावीर की देशना, करें आत्म कल्याण॥10॥

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती॥
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान॥11॥
भक्ति में तन्मय हो करके, चिन्मय मुरत पाया है।
सिद्ध निरामय निर्मल निश्चल, अविनाशी सुख पाया है॥
हो विरक्त जग उलझन से प्रभु, तेरे दर पर आऊँगा।
आत्म ओज का उद्भव होवे, महावीर गुण गाऊँगा॥12॥
सुख राशि गुणदाता जिनवर, दया सिन्धू महावीर प्रभो।
विघ्न हरण हे मंशापूरण, वर्धमान अतिवीर विभो॥
परमेश्वर हो, प्रतिपालक हो, जिन शासन के नायक हो।
महा-अर्घ्य चरणों मे अर्पित, सौरभ सागर ज्ञायक हो॥13॥

दोहा- **महावीर जिनराज का, अद्भुत है दरबार।**
भक्ति से पूजा करूँ, नमन करूँ शतबार॥

जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा॥॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र पंचकल्याणक संयुक्त शिवपद-कर्त्ता-भव-जल-निधी सर्वविघ्नव्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् सर्व जीव कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु धन-धान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु सर्व जीव रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्र-वृद्धिरस्तु सर्व-ऋद्धि-सिद्धि-भवतु रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की पूजा

स्थापना

सौरभ सागर गुरु को, नमन हो बारम्बार।
श्रद्धा पुष्प चढ़ा रहे, करना तुम उद्धार।।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो, सौरभ सागर महाराज।
जिह्वा गुण गाती रहे, हो मुनिवर सरताज।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

रगड़ रगड़ कर ये तन धोया, मन का मैल ना धो पाए।
इसीलिए तो गुरुवर क्षीरोदधि, से जल लेकर आए।।
निर्मल जल अर्पित करते हैं, जन्म जरामृत नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तरह तरह के लेप किए पर, तन संताप ना दूर हुआ।
जितना इसका शमन किया यह, उतना ही फिर और बढ़ा।।
मलयागिर चन्दन अर्पित तुमको, भव संताप को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

संसार दुःखों से भरा हुआ, नहीं मिलता मुझे किनारा है।
मोह माया से जकड़ा जीवन, पर ना कोई सहारा है।।

उज्जवल अक्षत अर्पित तुमको, इनको तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम वेग से घिरे हुए हैं, कैसे बन्धन तोड़े हम।
तरह तरह के इत्र लगाए, इन्द्रीय दास बने हैं हम॥
कोमल पुष्प समर्पित तुमको, काम बाण को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

नाना मिष्ट पकवान डकारे, फिर भी क्षुधा ना शान्त हुई।
जिव्हा के वश होकर मैंने, भक्ष अभक्ष की सुधि खोई॥
सरस नैवेद्य अर्पित तुमको, क्षुधा रोग को ध्वस्त करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में क्षुधा रोग विनाशनाय-नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अज्ञान तिमिर ने हमको घेरा, कैसे मंजिल पाएंगे।
तेरे ज्ञान की ज्योति पाकर, सहज पार हो जाएंगे॥
ज्ञान से ज्ञान की ज्योति जलती, दीपक तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अष्ट कर्म की दलदल में हम, हरदम फंसते जाते हैं।
पाप कर्म हम करते रहते, फल से नहीं घबराते हैं॥

धूप समर्पित तव चरणों में, अष्टकर्म का दहन करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौंग बादाम और किशमिश लेकर, तेरे द्वारे आए हैं।
मोक्ष के फल का स्वाद बता दो, इच्छा मन में लाए हैं।।
फल अर्पित है चरण तुम्हारे, मुक्ति रमा का वरण करूँ।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोक्ष फल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए।।
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद-प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **भव भव से भटके फिरे, कोई ना तारनहार।**
सौरभ सागर गुरु मेरे, तुम ही करो उद्धार।।

जयमाला

लय (दे दी हमें आजादी....)

सौरभ सागर जी देव, गुरुदेव हमारे।
करते हैं भव से पार, गुरुदेव हमारे।।
माँ चन्द्रप्रभा कोख में, जब आप थे आए।
शुभ स्वप्न देख माता भी, फूली ना समाए।।

गज, सर्प, आग, सूर्य भी, देख लिया था।
अद्वितीय पुत्र जन्मेगा, ये जान लिया था।।1।।

जसपुर में गुरुदेव, तुमने, जन्म लिया था।
जसपुर की माटी को भी, तूने धन्य किया था।।
गुरू पुष्पदंत संघ, जसपुर में पधारे।
बालक सुरेन्द्र पुष्प संग, चल दिया प्यारे।।2।।

तपअग्नि में बारह वर्ष, गुरूदेव तपाया।
मैं भी बनूँ तब सम, गुरु ये मन में है भाया।।
आचार्य गुरुदेव ने, सौरभ बना दिया।
मुनिबाने से गुरुदेव ने, तुमको सजा दिया।।3।।

बाली उमर से सौरभ जी, अमृत पिला रहे।
आहत भी राहत पाके, आशीष पा रहे।।
संस्कार अलख देव, जन जन में जगाए।
संस्कार प्रणेता तभी, गुरुदेव कहलाए।।4।।

सृजन किया गुरुदेव ने, रचना कई लिखी।
सिद्धान्त शतक एक है, नायाब नव कृति।।
जिसने भी गुरुदेव का, साहित्य पढ़ा है।
जैनत्व बोध करके, उसका पाप कटा है।।5।।

बच्चों व शिक्षकों को, चमड़ा मुक्त किया है।
सौरभाँचल तीर्थ का, उपहार दिया है।।
हिसार की नसिया का, भी उद्धार है किया।
मनहर पारस क्षेत्र नाम, उसको दे दिया।।6।।

भू गर्भ में दबे थे, आदि पार्श्व अर वीरा।
अपने ज्ञान योग से, तुम जान लिया था।।
ज्ञान योगी देव गुरूदेव कहाए।
गुरूदेव के जयकार से गगन गुंजाए।।7।।

झज्जर के ग्राम झाडली में वीर थे प्रकटे।
ना देगे वीर मूर्त, ग्रामवासी अड़ गए।।
भक्ति की शक्ति से, महावीर बुलाए।
मंशा पूर्ण वीर, महावीर कहलाए।।8।।

पुष्पगिरी तीर्थ अप्रैल दश महा।
मेला लगा दृश्य अनुपम रहा महा।।
चारों दिशाएं गुंज उठी नमस्कार से।
आचार्य पद प्रतिष्ठा हुई जयजयकार से।।9।।

हम भी तो तेरे दर पे, अरदास लाए हैं।
दर्शन तिहारे मिलते रहे, प्यास लाए हैं।।
जीवन में मेरे 'आशा' की, तुम ज्योत जगा दो।
सुना है तेरा नाम, मेरी बिगड़ी बना दो।।10।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **सौरभ सागर गुरु का, करूँ हमेशा ध्यान।**
भक्त की हर श्वास में, सौरभ सागर नाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आचार्य श्री सौरभ सागरजी का अर्घ

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन श्रृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभ सागर चालीसा

मनमंदिर में आन बसे, सौरभ सागर महाराज।
धर्म की राह दिखा दई, और सँवारे काज॥
ऐसे गुरु का यदि रहे, भक्त के सिर पर हाथ।
रोग शोक सब दूर रहे, सुख की हो बरसात॥

सौरभ सागर गुरु हमारे, भक्तों के सब कष्ट निवारे।
ये गुरुवर है अन्तर्यामी, मन की सारी बाते जानी॥
मनमोहक मुस्कान तुम्हारी, छवि तुम्हारी है मनहारी।
चन्द्रप्रभा जी की कोख में आए, शुभ लक्षण उनको दर्शाए॥
उगता हुआ इक सूरज देखा, सर्पो का एक जोड़ा देखा।
इक जंगल में आग भी देखी, हाथी की इक जोड़ी देखी॥
श्री पाल जी को स्वप्न बताए, फल जाना तो बहु हरषाए।
पुत्र रत्न इक घर आएगा, दावानल सा यश पाएगा॥
मस्त हस्ती सम भ्रमण करेगा, सूरज सम जग में चमकेगा।
बाबा की आँखों का तारा, सुरेन्द्र नाम लगता था प्यारा॥
गुरु पुष्प संघ जसपुर आया, इस बालक का भाग जगाया।
अद्भुत प्रतिभा देखी तुझमें, ज्ञानयोगी इक छिपा था तुझमें॥
पिता से तुमको मांग लिया था, मात पिता ने सहर्ष दिया था।
तप अग्नि में तुम्हें तपाया, बारह बरस का समय बिताया॥
क्षमावाणी का शुभ दिन आया, दीक्षा धारुँ ये था भाया।
21 सितम्बर दिन पुण्यशाली, होती गुरु की दीक्षा दिवाली॥
चहुँ दिशि अम्बर बने तुम्हारे, वीतरागी मुद्रा जब धारे।
वाणी तेरी शीतल चन्दन, शीघ्र मिटाती मन का क्रन्दन॥
जिस नगरी भी कदम बढ़ाए, अतिशय अपने खूब दिखाए।
धर्म की ऐसी अलख जगाई, 'संस्कार प्रणेता' उपमा पाई॥
जेल में जो उपदेश सुनाए, मद्य माँस से लोग छुड़ाए।
जब बच्चे उपदेश हैं सुनते, शहद ब्रैड व चमड़ा तजते॥
जिस नगरी भी किया चौमासा, भक्तों के मन भर दी आशा।
निर्बल तुझसे बल पा जाए, वीराने हरियाली पाए॥

जंगल में मंगल करते हो, संकट सारे तुम हरते हो।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, उसकी तो किस्मत है सँवारी।।
एक प्रेरणा तुमसे पाई सौरभाँचल की नींव धराई।
सौरभाँचल एक तीरथ प्यारा, नव जिनग्रह का देख नजारा।।
वृहद आदि पद्मासन प्रतिमा, नीलाम्बर का लगा चँदोवा।
श्रुत स्कन्ध मंदिर बनवाया, द्वादशांग का मान बढ़ाया।।
रत्न चौबीसी मन को भाए, देख देख के हिय हरषाए।
सूनी थी हिसार की नशिया, पर भू भीतर दबी थी निधिया।।
अपने ज्ञान ध्यान से जाना, त्रय जिनदेवा भीतर जाना।
हाथों से मिट्टी खुदवाई 'पार्श्व' 'आदि' 'वीरा' छवि पाई।।
जयकारों से गगन गुँजाए, ज्ञानयोगी गुरुदेव कहाए।
'मनहर पारस क्षेत्र' कहाया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया।।
मंशापूर्ण श्री महावीरा, सेवा भाव जगावे धीरा।
जीवन आशा नाम पुकारा, विकलांगों का बने सहारा।।
ज्ञानी मन चिंतन करता है, हर पल काव्य ग्रन्थ लिखता है।
धर्म गगन में करे विहारा, "सिद्धांत शतक" आगम है प्यारा।।
सब शूलों की सेज उठाते, जैनत्वो का बोध कराते।
पापों के दहकते अंगारे, प्रेरक प्रवचन बुझाते सारे।।
फैशन एक अभिशाप बताया, गर्भपात से सबको बचाया।
जैन विधान सदा करवाते, भक्तों के शुभ भाव जगाते।।
ख्याति लाभ की नहीं कामना, पूजा की भी नहीं चाहना।
विज्ञापन से दूर ही रहते, चर्या सावचेत हो करते।।
आगम के रत्नाकर गुरुवर, शान्त सौम्य छवि सुन्दर गुरुवर।
आशीर्वाद गुरु का फलता, जीवन सहज सरल हो चलता।।
तीर्थराज सम्मेद शिखर है, श्री सौरभांचल का परिसर है।
सहस्र वर्ष प्राचीन है प्रतिमा, अतिशयकारी पारस महिमा।।
10 अप्रैल का शुभ दिन आया, पुष्पगिरी में उत्सव छाया।
रवि पुष्य नक्षत्र कहाया, पुष्पदन्त ने सूरी बनाया।।
देश विदेश से यात्री आये, दृश्य देखकर अति हर्षाये।
सौरभ गुरु को शीश नवाया, धन्य धन्य सौभाग्य जगाया।।

जिस धरती पर कदम बढ़ाए, वो माटी चन्दन बन जाए।
घर घर ज्ञान के दीप जलाए, अज्ञान तिमिर मन का हट जाए।।
दर्शन पा मन पुष्प खिला है, वर्द्धमान का दर्श मिला है।
जब से तेरा साथ मिला है, 'हम-सब' को भगवान मिला है।।

दोहा– **सौरभ सागर चालीसा, मन से जो भी ध्याय।**
त्याग धर्म बढ़ता रहे, गुरु अनुकंपा पाए।।
गुरुवर तेरे चरण में, नमन हो बारम्बार
पापों का क्षय हो मेरा, भव से हो जाऊँ पार

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रूं सौरभ सागर गुरुवे नमः।

आरती आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की

(लय - तन डोले, मन डोले ...)

सौरभ सागर की, गुण आगर की
शुभ कंचन दीप सजाय के, आज उतारूँ आरतिया
माता चन्द्रप्रभा जी के जाये, श्रीपाल जी के सुत कहलाये
पुष्पदंत जी की बगिया से, ये कोमल पुष्प है आये
सुगन्धित कोमल पुष्प है आये
गुरु की सुरभि से सुरभित होकर कंचन दीप सजाय के ...
गुरु की छवि है इतनी निराली मन को बहुत लुभाती
महिमा गुरुवर के वचनों की जन-जन को हर्षाती
जय गुरुवर जन-जन को हर्षाती
इनके चरणन शत् शत् वन्दन शुभ कंचन दीप सजाय के...
जो भी इनकी शरण में आए, सब संकट कट जाये
हम भी भटके हैं जन्मों से हमको भी पार लगाये
हो जय गुरूवर, हमें भी पार लगाये
यह विनती करें तोसें अरज करें शुभ कंचन दीप ...

कुछ विशेष जाप

1. ॐ ह्रीं नमो अर्हते रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत-शक्ति भवतु ह्रीं नमः।
3. ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं श्री नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वसौख्यं कुरु कुरु नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं मम सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्टबुद्धिणं।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः।
10. ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहिपत्ताणं झ्रों झ्रों नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं मम इष्ट कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीराय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

जीवन परिचय

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

जन्म : कार्तिक कृष्णपक्ष अष्टमी (गुरुवार)
22 अक्टूबर, 1970 जसपुरनगर (छत्तीसगढ़)
बचपन का नाम : सुरेन्द्र कुमार
पिता का नाम : श्री श्रीपाल जैन
माता का नाम : श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन
गृहत्याग : शुक्रवार, 08 अप्रैल, 1983
क्षुल्लक दीक्षा : शुक्रवार, 17 जनवरी, 1986 छत्तरपुर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा : सोमवार, 27 जून, 1988 अंदेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)
मुनि दीक्षा : 21 सितम्बर, 1994 इटावा (उत्तर प्रदेश)
दीक्षा गुरु : पुष्पगिरि प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज
आचार्य पद : 10 अप्रैल, 2022 (पुष्पगिरि)
राजकीय अतिथि : झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

:: विशेष कृति ::

1. सिद्धान्त शतक
2. जैनत्व का बोध
3. धर्म गगन में करें विहार
4. प्रेरक प्रवचन
5. फैशन एक अभिशाप
6. शूलों की सेज
7. दहकते अँगारे
8. आओ लौट चलें
9. पत्थर की मानवाकृति
10. प्रतिमा से प्रतिभा जगे
11. सृजन के द्वार पर
12. हे इन्सान! मत बन तू शैतान
13. जैन शिक्षा भाग-1, 2, 3, 4
14. आराध्य आराधना
15. मंगलं पुष्पदन्ताद्यो
16. जैनाचार संहिता
17. श्रावकाचार संहिता
18. श्रमणाचार संहिता
19. भक्ति-सौरभ
20. अर्हत् चरण सपर्या (जिन-देवार्चना)

विधान

21. श्री भक्तामर स्तोत्र
22. श्री कल्याण मन्दिर
23. स्वयंभू चौबीसी
24. श्री मंशापूर्ण महावीर
25. चौंसठ ऋद्धि सिद्धि
26. आचार्य पुष्पदन्तसागर
27. श्री सम्मेदशिखर
28. माँ जिनवाणी
29. कर्मदहन
30. श्री नवग्रह जिनदेव
31. श्री पुष्पगिरी तीर्थ
32. जैन विधान संग्रह

:: पुण्यार्जक परिवार ::

* **मनोज कुमार जैन, ललित जैन, अतिशय जैन, अर्पण जैन**
  मै. पारसनाथ पोली बटन, दिल्ली-110031 मो.: 9810056286
* **मुकेश जैन, सौरभ जैन (सौरभसागर फैब्रिक्स)** बिहारी कॉलोनी, दिल्ली
* **श्री शिवसेन जैन, पंकज जैन, धीरज जैन** बलबीर नगर, दिल्ली
* **श्रीमती रेनू जैन श्री संजय जैन** 108 "सौरभांचल" पुष्पांजलि, दिल्ली
* **श्रीमती सुदेश जैन धर्मपत्नी स्व. श्री अनिल कुमार जैन गौरव जैन, खुशबू जैन** अंसारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली
* **विपुल जैन, पारस जैन (चिलकाना वाले)** आजाद नगर, दिल्ली
* **श्री सुभाष चन्द जैन, अचिन जैन, अंकित जैन (उमरपुर वाले)** बलबीर नगर, दिल्ली
* **प्रवीण जैन, दीपक जैन, अक्षत जैन (खेकड़ा वाले)** बलबीर नगर, दिल्ली
* **पवन जैन, गौरव जैन, निक्षेप जैन (शामली वाले)** महावीर ओवरसीज, दिल्ली
* **सतीश जैन, देवेश जैन (ककडीपुर वाले)** लक्ष्मी नगर, दिल्ली
* **उमेश जैन सीमा जैन** कृष्णा नगर, दिल्ली
* **सचिन जैन, विकास जैन, गौरव जैन** ए-37, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **विकास जैन निधि जैन** कृष्णा नगर, दिल्ली
* **नीलू जैन, श्रीमती कल्पना जैन, श्री रवि कुमार जैन** नया बाजार, ग्वालियर
* **प्रदीप कुमार जैन, मंजू जैन, अक्षय जैन, आरुषि जैन, अवन्या जैन** सूर्य नगर, गाजियाबाद
* **मुकेश जैन, प्रीति जैन, दर्शित जैन, सुन्ह जैन** भोलानाथ नगर, दिल्ली
* **पवित्र जैन (जय पारस गोल्डटच सेन्टर)** कृष्णा नगर, दिल्ली
* **श्रीमती मीना जैन धर्मपत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश जैन (बट्टनलाल) श्री मनोज जैन, श्रीमती मंजू जैन, मनीष जैन** (भिण्ड वाले)
* **चिन्मय जैन सुपुत्र दीपक जैन (चिंकी हौजरी)** ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली
* **धनकुमार जैन, प्रणय जैन, ध्वनि जैन, सुविज्ञ जैन** बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली
* **राजीव जैन, अमन जैन, यशी एंटरप्राइज** (Campio Files) शंकर नगर, दिल्ली

* **श्रीमती आभा जैन, श्री नीरज जैन, प्रक्षाल जैन, सिद्धार्थ जैन** हंस वाटिका, रेलवे रोड, शान्ति नगर, मेरठ
* **श्रीमती अर्चना जैन धर्मपत्नी श्री अनिल जैन, अक्षत जैन, आर्जव जैन** शंकर नगर, दिल्ली
* **जिन पूजन संगठन** मेरठ
* **मनीष जैन मेघा जैन** शालीमार बाग, दिल्ली
* **पुनीत जैन अवनी जैन** पीतमपुरा, दिल्ली
* **श्वेता जैन-शांतनु जैन, वत्सल जैन** सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली
* **अनिल जैन, माधुरी जैन, अमन जैन, महिमा जैन, विदित जैन** नेहा साड़ी, भिण्ड
* **बेबी वान्या जैन** 47, वीर नगर, जैन कॉलोनी, दिल्ली - 110007
* **सुश्री अमिता, अंजू, अंचल, आशीष जैन** अपने माता-पिता श्रीमती प्रमोद कुमारी जैन एवं श्री महेन्द्र कुमार जैन की पुण्य स्मृति में (लखनऊ)
* **संजय जैन ममता जैन श्रेष्ठ जैन** ई-13/6, कृष्णा नगर, दिल्ली
* **रवि जैन सोनिया जैन** 79, राम विहार, दिल्ली
* **जिनेन्द्र जैन शिखा जैन** सी-80, पुष्पांजलि, दिल्ली
* **आलोक जैन सोनिया जैन** 83, राम विहार, दिल्ली
* **श्रीमती सुमन जैन** सी-176, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **नीरज जैन पूनम जैन** ए-6, योजना विहार, दिल्ली-110092
* **पवन कुमार जैन निकुंज जैन गिरधरवाल** ए-180, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **अमित जैन निधि जैन** सी-97, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **कोमल जैन रिषभ जैन** 164, योजना विहार, दिल्ली
* **रुचि जैन अजय जैन** ए-104, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **अंजू जैन** 216, राम विहार, दिल्ली
* **अमित जैन पल्लवी जैन** 147, पुष्पांजलि, दिल्ली
* **अजय जैन रीना जैन** डी-107, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **जिनेश जैन सीमा जैन** 60, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली
* **संदीप जैन सुनीता जैन** 82, राम विहार, दिल्ली
* **अवनीश जैन अलका जैन** सरधना
* **लवकेश जैन, चीना जैन, शुचि जैन, अर्णव जैन, मानसी जैन** भोलानाथ नगर, शाहदरा, दिल्ली

सौरभांचल प्रकाशन

साहित्य प्रकाशन में ऑन लाईन सहयोग करने के लिए

Scan & Pay

UPI ID : 8448677688@ibl

A/c No.	: 45922900000921
A/c Name	: SAURBHANCHAL PRAKASHAN
Bank	: DCB BANK LIMITED
IFSC Code	: DCBL0000459

8448677688

कृपया इस नम्बर पर (व्हाटसअप)
जमा राशि का स्क्रीन शाट भेजकर रसीद प्राप्त करें।

विधान पुस्तक प्राप्ति स्थल

सौरभांचल प्रकाशन

गणधर गारमेन्टस
IX/842, प्रेम गली नं. 3-सी,
मुलतानी मौहल्ला, सुभाष रोड,
गांधी नगर, दिल्ली-110031

मनोज कुमार जैन
E-17/9, कृष्णा नगर,
दिल्ली-110051
मो. : 9810056286

1200 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से प्रगटित
श्री 1008 मंशापूर्ण महावीर स्वामी जी
गंगनहर, मुरादनगर, गाजियाबाद

श्री 1008 आदिनाथ भगवान ''सौरभाँचल''
गन्नौर (हरियाणा)

श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान पुष्पगिरी

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
जीवन आशा हॉस्पिटल प्रेरणा स्रोत
आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी
महाराज

सौरभ सागर सेवा संस्थान

JEEVAN ASHA
HOSPITAL & REHABILITATION CENTRE